August september 1983

अग. सित. 1983.

मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान

अगस्त-सितम्बर १६८३

स्तोत्र–विशेषांक

मंत्र तंत्र से सम्बन्धित भारत की श्रेष्ठ पत्रिका

सम्पादक
कैलाशचन्द्र

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर (राज.)

आप हजारों लोगों का कल्याण कर सकते हैं।

पाठकों की मांग पर पत्रिका ने यह निश्चय किया है, कि कुछ विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण लेखों की अतिरिक्त प्रतियों का रीप्रिन्ट प्रारम्भ किया जाय, इस महीने रीप्रिन्ट से सम्बन्धित लेख है -

❋	रामचरित मानस मन्त्र सिद्धि।	प्रति रीप्रिन्ट ५० पैसे
❋	आरती-संग्रह	५० पैसे
❋	आबू पर्वत पर पाई जाने वाली दुर्लभ जड़ी बूंटियां	५० पैसे
❋	लक्ष्मी पूजन	५० पैसे
❋	अचरज भरा अद्भुत सिद्धिप्रद : श्रीयन्त्र	५० पैसे

२- **मंगाने के नियम**—(१)अपना आदेश किसी भी सादे कागज पर लिखकर लिफाफे में बन्द कर भेजें। (२) पत्र में अपना नाम व पता पूरा स्पष्ट शब्दों में लिखकर भेजें। (३) किसी भी रीप्रिन्ट के लिए आपका आर्डर कम से कम पांच प्रतियों का होना चाहिए। (४)रीप्रिन्ट की पांच या अधिक प्रतियों का शुल्क पत्र के साथ ही "मन्त्र तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" के नाम से बने पोस्टल आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें। (५)मनीयार्डर से धनराशि भेजने पर उसकी रसीद पत्र के साथ लगा दें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान "जनकल्याण सेवा"

डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ

❋	लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग	१५) रु.
❋	शिव: साधना एवं सिद्धि	३०) रु.

आपके लिए सर्वथा एक नई योजना

- ※ क्या आप किसी विशेष समस्या से परेशान हैं ?
- ※ क्या आप चाहते हैं, कि भविष्य में घटित होने वाली घटनाएं पहले से ही स्पष्ट हो जांय?

तो इसके लिए आप इस नयी योजना में तुरन्त भाग लें—

ज्योतिष : आपकी समस्याओं का समाधान

नीचे खाली जन्म चक्र दिया जा रहा है, आप इसे भरकर हमारे पास भेजिये, उच्चकोटि के ज्योतिर्विद और साधक संयुक्त रूप से विचार कर आपके प्रश्न का विस्तार से उत्तर लिख भेजेंगे, और साथ ही आपकी समस्या का समाधान भी।

जन्म चक्र भरने के साथ साथ अपना नाम पता व अपना प्रश्न भी स्पष्ट रूप से लिख भेजें। एक प्रश्न का विस्तार से उत्तर भेजने का पारिश्रमिक मात्र तीस रुपये हैं।

धनराशि व्यक्तिगत नाम से न भेजकर "भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र" के नाम से भेजें। मनियार्डर या बैंक ड्राफ्ट भेज सकते हैं, चैक स्वीकार्य नहीं होगा।

....यहां से काटिये...

नाम..............

पता..............

प्रश्न..............

....यहां से काटिये...

नोट— यदि आप अपने प्रश्न का उत्तर साधारण डाक से चाहते हैं, तो प्रश्न के साथ ही लिफाफे पर स्वयं का पूरा पता तथा एक रुपये का डाक टिकट और रजिस्टर्ड डाक से चाहें तो चार रुपये के डाक टिकट लगाकर लिफाफा भेजें।

भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र,
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर–३४२००१ (राजस्थान)

आपका घर-प्रांगन सुमधुर मंगलदायक स्वर-लहरियों से गुंजाइये—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान की तरफ से अनुपम भेंट—

पांच अद्वितीय केसेटों का पूरा और भव्य सेट

❀ **स्तोत्र केसेट**

कई सुमधुर सुललित कंठ से गाये हुए त्रुटि रहित स्तोत्र — ० श्री स्तोत्र ० कनकधारा स्तोत्र ० अन्नपूर्णा स्तोत्र ० सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ० नवग्रह स्तोत्र आदि ।

❀ **गुरु गोविन्दम्**

सद्गुरुदेव से सम्बन्धित श्रेष्ठतम स्तोत्र —० गुरु स्तोत्र ० गुरु चालीसा ० गुरु गीता ० गुरु वाणी ० गुरु आरती ० गुरू पूजन ० गुरू पादुका आदि।

❀ **मधुरम् मधुरम्**

स्तोत्रों का एक भव्य केसेट, जिसमें कई प्राचीन स्तोत्र शुद्ध रूप से गाये गये हैं, एक लाजबाब केसेट ।

❀ **शिव शंकरम**

भगवान शंकर की सर्वाधिक प्रिय रुद्राष्टाध्यायी, शुद्ध यजुर्वेद पाठ सहित और साथ में शिव महिम्न स्तोत्र भी, एक लाजवाब केसेट ।

❀ **मंगलवाणी**

प्रातःकाल घर में बजाये जाने वाले ऐसे सरस पद्य....भजन.... स्तोत्र जो आप पहली बार सुनेंगे....आश्चर्यजनक सुमधुर केसेट

श्रेष्ठ तकनीक व उत्तम केसेट के संयोग से आपके घर में संग्रहणीय ।

प्रत्येक केसेट का मूल्य ६०) साठ रुपये

पाँचों केसेटों का सेट एक साथ मंगाने पर २५०) रुपये

धनराशि ड्राफ्ट या मनियार्डर से निम्न पते पर भेजें ।

दुर्लभ सामग्री केन्द्र
डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

वर्ष : ३

अंक : ८-९

अगस्त-सितम्बर १९८३

सम्पादक
कैलाशचन्द्र

☼

स० सम्पादक
हेमन्त कुमार

मुख पृष्ठ

☼

कार्यालय पता —

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डा० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववांछापिच नमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखी सुखेच्छापिन पुनः ।
अतस्त्वा संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिव शिव भवानी ति जपतः ।।

—शंकराचार्य

हे मां! मेरी न तो मोक्ष की आकांक्षा है, और न मैं वैभव विलास का आकांक्षी हूं, न उन्नति का इच्छुक हूं, और न मुझे सुन्दर स्त्रियों से प्राप्त सुख की लिप्सा है, मेरी तो मात्र एक ही इच्छा है, कि मेरा मृडाणी, रुद्राणी, मां, भवानी जैसे शब्द-स्तोत्र पढ़ते-पढ़ते जीवन समाप्त हो जाय ।

☼

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है, पत्रिका का वार्षिक विशेषांक का मूल्य ही दो वर्ष के सदस्यता शुल्क के बराबर है, अतः अन्य सभी अंक, जब तक प्रकाशित हो, निःशुल्क समझें पत्रिका का दो वर्ष का सदस्यता शुल्क १३०) रु०, एक वर्ष का ७०) रु० तथा एक अंक का मूल्य ६) रु० है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को गल्प समझें, किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय तो इसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-सन्त होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी, तथा साधक ऐसी कोई उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित सामग्री के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापित यन्त्र व सामग्री का पत्रिका परिवार से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।

सम्पादकीय

भारतवर्ष आजकल एक विशेष प्रकार के संक्रांति काल से गुजर रहा है, चारों तरफ के वातावरण पर दृष्टि डालें, तो एक अजीब सा माहौल नजर आता है, पारस्परिक द्वेष, छल, कपट, झूठ, फरेब, व्यक्ति के रग-रग में समा गया है, देवी-देवताओं का मखौल उड़ाया जा रहा है, और धर्म के मूल तत्वों पर प्रहार हो रहे हैं।

ऐसी स्थिति में साधारण मानव दिग्भ्रमित हो गया हैं, उसका अवलम्ब आराध्य ही रह गया है, पर साधारण पढ़ा लिखा होने की वजह से न तो वह भली प्रकार से पूजा-पाठ कर सकता है, और न विधि विधान ही। यही नहीं, अपितु संस्कृत का पूर्ण ज्ञान न होने की वजह से भली प्रकार से संस्कृत स्तोत्र पाठ भी नहीं कर पाता........वह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया है, कि क्या करे ? कैसे करे ?

अपने इष्ट की... आराध्य को आराधना करने के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह पंडित हो........संस्कृत का उच्च कोटि का ज्ञाता हो ...आवश्यकता तो हृदय की है, भावनाओं की और अपने विचारों को व्यक्त करने की है........फिर भले ही वे विचार हिन्दी में हों, अवधी में हों या किसी भी भाषा में हों........प्रभु के सामने हम सब तो अबोध बालक की तरह हैं........जो तुतला सकते है, और तुतलाने में शुद्ध भाषा-ज्ञान अनिवार्य नहीं है........मां तो बालक की उस तुतलाहट पर ही सौ-सौ बार बलिहार हो जाती है।

इसी भावना को ध्यान में रख कर इस बार पत्रिका का यह 'स्तोत्र विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें संस्कृत स्तोत्र नहीं के बराबर हैं........जो भी हैं सरल भाषा में........ भावनाओं से सिक्त........प्राणवान........वेगवान........स्फूर्तवान।

भक्तों के द्वारा इनमें से कई स्तोत्रों को गाते हुए मैंने सुना है, भाव विह्वल होकर उन्हें आंसू बहाते हुए देखा है, और अपने आराध्य से एकाकार होते हुए अनुभव किया है।

ऐसे हो सरस पदों का यह अनमोल सग्रह प्रत्येक भक्त, भावुक, भाई और बहिन, विद्वान और मजदूर सभी को गम्य होगा, सहज होगा, ऐसा विश्वास है।

इनमें से कई स्तोत्रों की रचना साधुओं ने स्वयं करके पत्रिका कार्यालय को भेजी है, अधिकतर सामग्री उन घुमक्कड़ साधु-संतों से प्राप्त हुई है, जो सीधे-सादे, सरल, भावुक, निश्छल हृदय हैं।

जिन ज्ञात अज्ञात ग्रन्थों से ये स्तोत्र उन साधु-संतों के द्वारा प्राप्त हुए हैं, उन सभी रचनाकारों, प्रकाशकों और सन्तों को धन्यवाद देता हूं, और उनके प्रति अनुग्रहीत हूं।

मुझे विश्वास है, सभी पाठकों को ये स्तोत्र अत्यधिक अनुकूल प्रतीत होंगे।

—सम्पादक

स्तोत्र पाठ से सम्बन्धित ज्ञातव्य तथ्य

स्तोत्र से सम्बन्धित प्रस्तुत तथ्य सम्पूर्ण स्तोत्र-दर्शन का सार है, अनेक स्तोत्र उपलब्ध हैं, परन्तु स्तोत्रों में निहित मूल भावना तथा उनकी पाठ-विधि पर अब तक बहुत कम प्रकाश डाला गया है।

शास्त्रों में कहा गया है, कि कलियुग में स्तोत्र सबसे अधिक शक्तिशाली और शीघ्र प्रभावकारी है, स्तोत्र पाठ करते समय साधक को कुछ विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए, नीचे मैं शास्त्रों में वर्णित कुछ तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि स्तोत्र-पाठ करते समय ध्यान में रखने चाहिए-

१- स्तोत्र हिन्दी या संस्कृत में हो तो यथासम्भव मूल पाठ को ही पढ़ना चाहिए, उसका अनुवाद पढ़ने से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता।

२- हम ईश्वर के सामने बालक के समान हैं, और यही भाव मन में रख कर स्तोत्र पाठ करना चाहिए, बालक यदि त्रुटियां करता है, तब भी वह क्षम्य है, अतः हम भी इसी भावना को लेकर पाठ करें।

३- शुद्ध होकर, शुद्ध आसन बिछाकर सामने उस देवता का विग्रह या मूर्ति रखकर स्तोत्र पाठ करें, यदि यह सम्भव नहीं हो तो आंख बन्द कर संबंधित देवता का ध्यान मानस में करके फिर पाठ करना चाहिए।

४- पाठ शुद्धता अति आवश्यक है, अतः यथासंभव स्तोत्र का पाठ शुद्ध रूप में करें।

५- स्तोत्र पाठ गेय रूप में करें, अर्थात् यदि स्तोत्र को गाया जा सके, तो गाकर ही पाठ करना चाहिए।

६- पाठ करते समय क्रोध, आलस्य, निद्रा, तन्द्रा या अन्य व्यवधान नहीं होने चाहिए, जब हम प्रफुल्लचित्त हो तभी हमें स्तोत्र पाठ करना चाहिए।

७- स्तोत्र पाठ करते समय हमारे वस्त्र स्वच्छ और पवित्र हों।

८- स्तोत्र पाठ सात्विक भाव से करें, और इस बात का ध्यान रखें कि हम जो कुछ बोल रहे हैं, वह सत्य और प्रामाणिक रूप से बोल रहे हैं।

९- स्तोत्र पाठ करने वाले साधक को उस स्तोत्र का अर्थ ज्ञात होना चाहिए, बिना अर्थ ज्ञात किये मात्र तोते की तरह पढ़ने से कोई लाभ नहीं होता।

१०- स्तोत्र पाठ में मधुरता होनी आवश्यक है। उतावली में या समय की न्यूनता के कारण जल्दी-जल्दी स्तोत्र पाठ करना किसी भी दृष्टि से अनुकूल नहीं है।

११- स्तोत्र पाठ करते समय मुंह में कोई अन्य वस्तु नहीं होनी चाहिये, और पाठ करते समय किसी प्रकार का नशा या व्यसन आदि का

प्रयोग नहीं करना चाहिए।

१२- स्तोत्र पाठ प्रारम्भ करने बाद तब तक आसन से नहीं उठना चाहिए, जब तक वह स्तोत्र पूरा न हो।

१३- स्तोत्र पाठ सरल चित्त से करना चाहिए। मन में किसी प्रकार का अहंभाव लेकर स्तोत्र पाठ करना वर्जित है।

१४-यदि हम सही रूप में, सही स्वर में तथा सही भावना से स्तोत्र पाठ करें, तो स्तोत्र पाठ का तुरन्त प्रभाव होता है, स्तोत्र पाठ में यद्यपि त्रुटि क्षम्य है, फिर भी यथासम्भव त्रुटि न हो, तो ज्यादा अच्छा है।

१५-स्तोत्र पाठ करते समय यदि सामने दीपक और अगरबत्ती प्रज्जवलित हो तो अनुकूल रहता है।

१६-स्तोत्र पाठ करते समय उस स्तोत्र की भावना मधुरता और रम्यता में पूरी तरह डूब जाना चाहिए, एक प्रकार से साधक को उस स्तोत्र का ही एक भाग बन जाना चाहिए, जब तक साधक स्तोत्र और सम्बन्धित देवता से एक-रूपता प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसका लाभ पूरी तरह प्राप्त नहीं हो पाता।

१७-मन ही मन स्तोत्र पाठ करना वर्जित है, स्तोत्र पाठ उच्चारण के साथ करना चाहिए।

१८-नित्य नियमित रूप से स्तोत्र पाठ करने पर वह मन्त्र स्वरूप हो जाता है, और उसका प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देने लग जाता है, अतः स्तोत्रका चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिये।

१९-स्तोत्र-पाठ सुखासन में बैठकर किया जाना चाहिए, इसके अलावा यदि साधक किसी अन्य आसन में बैठकर पाठ करना चाहे तो कोई हानि नहीं है।

२०-स्तोत्र पाठ करते समय सामने संबंधित देवता का चित्र, अगरबत्ती, दीपक व जल का पात्र हो तो ज्यादा अनुकूल रहता है, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार अग्नि (दीपक), वरुण (जल पात्र) की साक्षी में ही स्तोत्र पाठ होना चाहिए।

२१-स्तोत्र पाठ प्रातः सायं या रात्रि किसी भी समय किया जा सकता है, इसके लिए कोई विशेष समय निश्चित नहीं होता, जब भी मन में तरंग उठे, जब भी स्तोत्र पाठ की इच्छा जाग्रत हो, जब भी प्रभु के समीप बैठने की भावना बने, तभी बैठकर स्तोत्र पाठ किया जा सकता है, परन्तु अपवित्र शरीर से या अपवित्र आसन पर बैठकर स्तोत्र पाठ करना वर्जित है।

२२-स्तोत्र पाठ करते समय या इससे पूर्व भारी भोजन नहीं करना चाहिए, शरीर को स्वच्छ व हल्का बनाये रखना अनुकूल रहता है।

२३-कलियुग में स्तोत्र पाठ ही श्रेष्ठतम विधान माना गया है।

* * *

गणेश

भगवान गणेश समस्त देवताओं में अग्रगण्य, ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी तथा विघ्नहर्ता है, हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार कोई भी पूजा पाठ साधना आदि तब तक सफल नहीं मानी जा सकतीं, जब तक कि सर्व प्रथम गणपति स्मरण, पूजा आदि न हो जाय।

वस्तुत: प्रत्येक साधक को अपनी नित्य पूजा में गणपति स्तोत्र को अवश्य ही स्थान देना चाहिए।

– श्री गणेश चालीसा –

चौपाई

जय जय जय गणपति गणराजू ।
मंगल भरन करन शुभ काजू ।।
जय गजवदन सदन सुख दाता ।
विश्व विधायक बुद्धि विधाता ।।
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन ।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ।।
अर्धचन्द्र मस्तक, पर सोहै ।
छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहै ।।
राजित मणि मुक्तन उर माला ।
स्वर्ण मुकुट सिर नयन विशाला ।।
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं ।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं ।।
सुन्दर पीताम्बर तन राजित ।
चरण पादुका मुनि मन राजित ।।

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता ।
गौरी ललन विश्व विख्याता ।।
ऋद्धि सिद्धि तव कंवर सुढारे ।
मूषक वाहन सोहत द्वारे ।।
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी ।
एक समय गिरिराज कुमारी ।।
बनयो बदन मैल की मूरति ।।
अति छबिवन्त मोहिनी सूरति ।।
सो द्वारे ड्योढ़ी पर लाई ।
द्वारपाल करि तुहि बैठाई ।।
असुर एक शिव रूप बनावै ।
छल करनी हित घात लगावै ।।
ताहि समय शंकर जी आयो ।
बिनु पहिचान जान नहिं पायो ।।

पूछहिं शिव तुम केहिके लाला ।
बोलत भे तुम वचन रसाला ।।
मैं गिरिजा सुत तुमहिं बतावत ।
बिनु चीन्हें कोउ जान न पावत ।।
भवन धरो जनि पांव उभारी ।
अहै कौन पहिचान तुम्हारी ।।
आवहिं मातु बुझि तब जाओ ।
बालक से जनि रारि बढ़ाओ ।।
धर्यो शम्भु जब पांव अगारी ।
मच्यो तुरत सरबर तब भारी ।।
तत्क्षण कछु शङ्का उर धारी ।
शिव तिरशूल भूल बस मारी ।।
सिरस फूल सम शिर कटि गयऊ ।
चट उड़ि गगन लोप महं भयऊ ।।
शम्भु गये जब भवन मंझारी ।
बैठी जँह गिरिराज कुमारी ।।
कहन लगे शिव मन सकुचाये ।
कही सती सुत कँह ते जाये ।।
तुरतहिं कथा प्रगट भै सारी ।
करी सोच गिरिजा मन भारी ।।
कियो न भल स्वामी तुम जाओ ।
लाओ सुवन जहां से पाओ ।
चले तुरत सनि शिव विज्ञानी ।
चट इक हस्ती के शिर आनी ।।
धड़ ऊपर थापति करि दीन्हे ।
प्राणवायु संचालन कीन्हें ।।
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे ।
बनहु बुद्धिनिधि असवर दीन्हें ।।
प्रथम पूज्य तुमही सुख दाता ।
अति शुचि विद्या बुद्धि सुज्ञाता ।।

नाम तुम्हार प्रथम लै कोई ।
कारज करै सकल सिधि होई ।।
तुम सुमिरत सुख सम्पति नाना ।
तुम्हें बिसारे नहिं कल्याना ।।
तुम्हरो शाप आज जग अङ्कित ।
चौथ मयंक भयो अकलंकित ।।
बुद्धि परीक्षा तुहिं शिव कीन्हा ।
पृथ्वी कर प्रदक्षिण लीन्हा ।।
चले षडानन भूमि भुलाई ।
रचे बैठि तुम बुद्धि उपाई ।।
'राम' नाम लिखि महिपर अंका ।
सात भंवर दो करी न शंका ।।
धनि गणेश कहि शिवमन हर्षे ।
नभ ते सुरन सुमन बहु वर्षे ।।
तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई ।
शेष सहस मुख सके न गाई ।।
मैं मति हीन मलीन दुखारी ।
करौं कौन विधि बिनय तुम्हारी ।।
भजत राम सुन्दर प्रभु दासा ।
लग प्रयाग ककरा दुर्वासा ।।
अब प्रभु दया दीन पर कीजैं ।
अपनी भक्ति-शक्ति कछु दीजै ।।

दोहा

श्रीगणेश यह चालिसा, पाठ करै धरि ध्यान ।
नित नवमंगल गृह लहैं, मिलै जगत सम्मान ।।

।। गणेशचालीसा सम्पूर्णम् ।।

पूज्य श्री सद्गुरुदेव

जब जीवन में पुण्यों का उदय होता है, तब सद्गुरु से भेंट होती है, हमने ईश्वर को नहीं देखा, पर अपने गुरुदेव को देखकर अनुमान लगा सकते हैं, कि ईश्वर का स्वरूप कैसा होगा ? कबीर के शब्दों में ईश्वर का रूप-स्वरूप ठीक वैसा ही होगा, जैसा गुरुदेव का रूप है।

बिना गुरु धारण किये पूजा पाठ जप तप अनुष्ठान व्यर्थ है, बिना उनके मार्ग दर्शन के सफलता नहीं मिल सकती, बिना गुरुदेव का स्मरण किये किसी भी कार्य में सिद्धि प्राप्त नहो होती।

इसीलिए तो हमारे जीवन में सर्वाधिक महत्व पूज्य गुरुदेव का है; प्रातः स्नान के बाद गुरु पूजा में सर्वप्रथम गुरु चालीसा, गुरु स्तोत्र एवं आरती करने के बाद ही गणेश आदि देवताओं का पूजन आराधन अनुष्ठान आदि करना चाहिए।

* श्रीगुरू चालीसा *

दोहा

गणपति, शारद के सहित, गुरु को करूं प्रणाम।
गुरू चालीसा मैं लिखूं, गुरु का रूप ललाम ॥

चौपाई

गुरू है ब्रह्मा, विष्णु, महेशा।
गुरू ही शिष्य जगत का ईशा ॥
गुरू के चरण सुगन्धित चन्दन।
गुरू के चरणों में वृन्दावन ॥
गुरू के अक्षर की बड़ महिमा।
गुरू चरणों में अणिमा, लघिमा ॥
गुरू का 'ग' है सिद्धि प्रदाता।
गुरू का 'र' है ताप मिटाता ॥
गुरू का 'उ' कल्याण करावे।
जनम-मरण से मुक्ति दिलावे ॥
गुरू यज्ञ-जप-तीरथ सारा।

गुरु, रवि,शशि, नक्षत्र प्रसारा ।।
गुरु में पावक दिव्य स्वरूपा ।
गुरु में जल है व्याप्त अनूपा ।।
गुरु है पृथ्वी का आधारा ।
गुरु में सकल व्योम विस्तारा ।।
गुरु ही सकल तेज के धारी ।
पंचतत्व के हैं अधिकारी ।।
सर्व प्रथम करो गुरु पूजा ।
इष्टदेव का क्रम है दूजा ।।

दोहा

गुरु की पूजा के बिना, धरे इष्ट का ध्यान ।
भैरों उस का जस हरे, यह है शास्त्र प्रमाण ।।

चौपाई

गुरु ही कर्ता, गुरु ही भर्ता ।
गुरु के चरणों बसी पूर्णता ।।
गुरू का ध्यान, गुरू की पूजा ।
गुरु के रूप समान न दूजा ।।
गुरु का पद-तल सिद्धि प्रदाता ।
गुरु की कृपा मोक्ष की दाता ।।
दिव्य नेत्र के देवन हारे ।
जीवन नैया खेवन हारे ।।
कुण्डलिनी के बोध करैया ।
सहस्रार में प्राण धरैया ।।
भूत-भविष्य बतावन हारे ।
वर्तमान की भूल सुधारे ।।
गुरु की कृपा अगर हो जाये ।
सभी देवता वर दे जाएं ।।
जिसने की न गुरू की पूजा ।
उस सम नहीं मूर्ख कोइ दूजा ।।
गुरु की आज्ञा को जो टारे ।
बिना मौत अपने को मारे ।।
आयु धर्म का नाश करावे ।
शक्ति-बुद्धि औ लक्ष्मी जावे ।।

दोहा

जीवन भर दुख भोग कर जब वह देवे प्राण ।
घोरे नरक उसको मिले दुःख से मिले न त्राण ।।

।। चौपाई ।।

मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामनम् ;
परशुराम औ बुद्धम-चरितम् ।।
नरहरि रूप सभी अवतारा ।
गुरु का है सब में विस्तारा ।।
काली, दुर्गा, भुवना, तारा ।
मातंगी, धूमा औ त्रिपुरा ।।
कमला, बगला, पूर्णा, भीमा ।
इनसे बढ़कर गुरु की सीमा ।।
गंगा, यमुना, पुष्कर, रेवा ।
सबसे बढ़कर है गुरु-सेवा ।।
काम, क्रोध सब दूर करावे ।
मन का अन्धकार मिट जावे ।।
जब-जब पुण्य जन्म के जागे ।
तब वह पहुंचे गुरु के आगे ।।
भव निद्रा से वही जगाए ।
अगम-पन्थ पर वही बढ़ाए ।।
पशु-जीवन से आगे बढ़ता ।
रसना से है 'गुरु-गुरु' रटता ।।
गुरु तब आतमबोध करावे ।
मूल तत्व का ज्ञान बतावे ।।

दोहा

अश्रु पखारे चरण को, बजें हृदय के तार।
ऐसे मधुरिम क्षणों पर, सब कुछ है न्यौछार ।।

अपने पन को पूर्ण बिसारे।
अपना तन-मन-जीवन वारे ।।
गुरु ही पिता, वही है माता।
गुरु ही स्वामी, गुरु ही भ्राता ।।
गुरु ही सकल दु:खों का त्राता।
गुरु ही जीवन, भाग्य विधाता ।।
मन का कल्मष दूर करावे।
सहस्रार का कमल खिलावे ।।
समाधिस्थ करके हर्षावे।
अनहद मंगल-नाद सुनावे ।।
आत्मलीन हो जो सुख पावे।
उसकी दशा न बरनी जावे ।।

अनुभव की यह मौन कहानी।
जिसको कभी न समझे ज्ञानी ।।
गुरु अपूर्ण को पूर्ण करावे।
जनम-जनम की साध पुरावे ।।
दिव्य ज्ञान की ज्योति-जलावे।
हर्षित हो, अमृत बरसावे ।।
बिन्दु-सिन्धु का मेल करावे।
परम-ब्रह्म से गुरू मिलावे ।।

दोहा

ऐसे मनहर गुरू पर यह जीवन बलिहार।
चरणों में रत हम रहे, विनती शत-शत बार ।।
गुरु-चालीसा जो पढ़े, सदा हृदय चित लाय।
मनोकामना पूर्ण हो, गुरूदेव हर्षाय ।।

❀ ❀ ❀
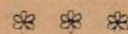
गुरू–स्तुति

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया.......

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया.......

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया.......

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया........

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं साकार तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया .. ....

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो ।
मैं हूं संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में ।।
अब सौंप दिया........

— — —

- गुरू–समर्पण -

यह विनती है पल पल क्षण क्षण । रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।१।।

चाहे कुल परिवार जो बैरी बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यह विनती है........

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो ।
पर मन नहीं मेरा डगमग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यह विनती है........

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पे मुझे चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यह विनती है........

जिह्वा पर तेरा नाम रहे तेरी चाह सुबह और शाम रहे ।
तेरी यादें आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यह विनती है........

ज्योत से ज्योत जगा दो

ज्यौत से ज्योत जगा दो सद्गुरु ज्यौत से ज्यौत जगा दो।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु ज्यौत से ज्यौत जगा दो ।।
हे योगेश्वर, हे ज्ञानेश्वर, हे सर्वेश्वर हे परमेश्वर।
कृपा मेह बरसा दो सद्गुरु, ज्योत से ज्योत जगा दो ।।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु........

आप दीप हैं हम हैं बाती, आप पुष्प हम सुगन्ध सराती।
मंगल दरस दिखा दो सद्गुरु ज्यौत से ज्यौत जगा दो ।।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु........

अन्तर आतम खोई खोई, इस चित में युग युग से सोई।
अब तो इसे जगा दो सद्गुरु ज्यौत से ज्यौत जगा दो ।।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु.. ....

ज्योति जले जब हृदय गगन में, आत्म ज्ञान फैले इस मन में।
सोऽह नाद जगा दो सद्गुरु ज्योत से ज्यौत जगा दो ।।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु........

जीवन मुक्त बने अविनाशी, नारायण-चरणों का वासी।
मेरा बेड़ा पार लगा दो सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगा दो ।।
मेरा अन्तर तिमिर मिटा दो सद्गुरु........

भजन

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्य बचन क्यों छोड़ दिया ?
झूठे जग में दिल ललचा कर,
असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब संभाला,
लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?
जेहि सुमिरन ते अति सुख पावे,
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
खालस एक गुरुदेव भरोसे,
तन, मन, धन क्यों न छोड़ दिया ?

गुरु-चरण

मोहे लागी लगन गुरु चरन की

चरन बिना मोहे कछु नहीं भावे,

झूठ माया सब सपनन की ।।१।।

भव सागर सब सूख गया है,

फिकर नहीं मुझे तरनन की ।।२।।

मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर,

उलट भई मोरे नयनन की ।।३।।

❋

हे ! मेरे गुरुदेव

हे मेरे गुरुदेव करुणासिन्धु करुणा कीजिये ।

हूं अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ।।

खा रहा गोते हूं मैं भव सिन्धु के मझधार में ।

आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ।।

मुझ में नहीं जपतप न साधन और ना कुछ ज्ञान है

निर्लज्जता है एक बाकी, और बस अभिमान है ।

पाप बोझे से लदी नैया भंवर में जा रही ।

नाथ ! दौड़ो अब बचा लो जल्द डूबी जा रही ।।

आप भी गर सुधि न लोगे फिर कहां जाऊंगा मैं ।

जनम दुःख से नाथ कैसे पार कर पाऊंगा मैं ।।

सब जगह से तो भटक कर ली शरण अब आपकी

पार करना और न करना दोनों मरजी आपकी ।।

❋

—गुरु चरणों में—

यह प्रेम सदा भरपूर रहे,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।

यह अरज मेरी मंजूर रहे,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।।

अब सौंप दिया इस जीवन का,

सब भार तुम्हारे चरणों में ।

उद्धार करो है दास खड़ा,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।।

इस जग में देखा सार नहीं,

तब श्री चरणों की शरण गही ।

भव बन्ध कटे यह है विनती,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।।

आंखों में तुम्हारा रूप बसे,

मन ध्यान तुम्हीं में मगन रहे ।

तन अर्पित सब निज कर्म करें,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।।

गुरु शब्द मेरे मुख से निकले,

मेरे नाथ जिसे सुनकर पिघले,

मेरे अहंकार भी अब तो ढले,

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में ।।

❋

गुरुदेव दया कर दीन जने

भव सागर तारण कारण हे।
रविनन्दन बंधन खण्डन हे।
शरणागत किंकर भीत मने।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

हृदि कंदर तामस भास्कर हे।
तुमि विष्णु प्रजापति शंकर हे।
परब्रह्म परात्पर वेद भणे।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

मन वारण शासन अंकुश हे।
नर त्राण तरे हरि चाक्षुश हे।
गुणगान परायण देव गणे।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

रिपुसुदन मंगल नायक हे।
सुख शांति यशोमय दायक हे।
त्रयताप हरे तव नाथ गुणे।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

तव नाम सदा शुभ साधक हे।
पतिताधम मानव पावक हे।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

जय सद्गुरु ईश्वर प्रापक हे।
भय रोग विकार विनाशक हे।
मनयेन रहे तव श्री चरणे।
गुरुदेव दयाकर दीन जने ॥

रखलो अपने पास मुझे

गुरुदेव दयालु दया करके,
रख चाकर अपने द्वार मुझे।
धन दौलत और किसी को दे,
बस दे दे अपना प्यार मुझे।

तन मन का चाहे न होश रहे,
तेरा नाम न भूलूं दिल से मैं।
तेरे ध्यान में इतना खो जाऊं,
पागल समझे संसार मुझे।

मैं भूला भटका राही हूं,
जग में कोई अपना न सका।
अब तेरे द्वार पै आया हूं,
जैसे चाहे सम्हाल मुझे।

जब तक इस तन में प्राण रहें,
तेरे नाम रूप का ध्यान रहे।
विलीन तुम्हीं में हो जाऊं,
इतना कर दे सरकार मुझे।

मैं व्याकुल होकर फिरता हूं,
तुम कहां प्रभु हो पा न सका।
मैं अपने दिल में झांकू तुझे,
बस हो जाये दीदार मुझे।

मैं जितना अर्ज सुनाता हूं,
गुरुदेव करो स्वीकार मुझे।
बेकल हूं तेरा दास प्रभु,
तुम रख लो अपने पास मुझे।

गुरू-वन्दना

हे दीनबन्धु दयालु गुरु,
केहि भांति तब गुण गाऊं मैं।
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि,
नाथ कहि के सुनाऊं मैं।।
जिह्वा अपावन है मेरी,
गुरु नाम कैसे लीजिये।
मन फंस रहा भव जाल में,
वह किस तरह प्रभु दीजिये।।
धन-धान्य माया रूप है,
क्यों कर निछावर कीजिये।
संसार सागर में फंसा,
गुरु ध्यान कैसे कीजिये।।
तन कैसे अर्पण कर सकूं,
यह तो महा पापी अधम।
धन धान्य औ मन दे के,
गुरु तुमसे नहीं उद्धार हम।।
श्रद्धा सुमिरनी भेंट करी,
मैं दीन हों चरणों पड़ा।
मैं पतित हूं तुम पतित पावन।
आपका है आसरा।।
भव सिन्धु में हूं फंस रहा,
गुरुदेव मुझे उठाइये।
गहि बाँह दीना नाथ,
अपराधी को पार लगाइये।।
जो दीन हो चरणों पड़े,
हे नाथ वे सारे तरे।

तेरा भिखारी तुम बिना,
प्रभु आसरा किसका करे।।
मैं दीन हूं तुम दीनबन्धु
मैं अधम तुम नाथ हो।
मैं हूं अनाथ कृपानिधान,
तो तुम अनाथों के नाथ हो।।
माता, पिता, सुत, भ्रात-भार्या
कोई भी साथ न जायेंगे।
उस पाक कुम्भी नरक में,
कोई न हाथ बंटायेंगे।।
यह सोच कर तव शरण आया,
अब ठिकाना है नहीं।
बस पार कर दो मेरी नौका,
और अपना है नहीं।।
हे जगनायक विश्व विनायक,
हे जग जीवन के जन हे।
हे दुःख भंजन, जनमन रंजन,
जय जय आनंद के धन हे।।
गुरू-पितु माता, सब जग त्राता,
मनुज रूप नर नागर हे।
हे निर्गुण, हे निराकार प्रभु,
निर्भय निगम निरंजन हे।।
व्यक्त तुम्ही, अव्यक्त तुम्हीं हो,
सत, चित आनन्द रूप विभो।
गुणागार गोतीत अगोचर,
अनुभव गम्य अजेय प्रभो।।

सबके स्वामी अन्तर्यामी,
पारब्रह्म परमेश्वर हे।
करूणासागर सबगुण आगर,
सत् चित प्रेम निकेतन हे।।

आरती

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक भवबन्धन हारी।।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव गुरु मूरत धारी।
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी।।
जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजै।
गुरू बिन ज्ञान न होवे कोटि यत्न कीजै।।
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे।
नाम जहाज बैठाकर गुरु पल में तारे।।
काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी।
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे।।
नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावे।
सब का सार बताकर गुरु मारग लावे।।
गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी।
बचन सुनत श्रीगुरू के सब संशय हारी।।
तन मन धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजे।
ब्रह्मानन्द परमपद मोक्ष गती लीजै।।

— ※ —

श्री कृष्ण

"कृष्णं वन्दे जगद्गुरौ" के रूप में भगवान श्री कृष्ण योगीराज, जगद्गुरू, कूटनीतिज्ञ होने के साथ-साथ गीता का पावन सन्देश देने वाले उच्च कोटि के ज्ञानी भी थे, उनके जीवन का प्रत्येक कार्य हम सब के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय है।

प्रत्येक भारतीय का यह परम पावन कर्तव्य है, कि वे अपनी पूजा में भगवान श्री कृष्ण से सम्बन्धित स्तोत्र, आराधना, स्तुति अवश्य रखें।

ॐ श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर अधर मुरली गिरिधरम्।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया सांवरे राधे वरम्।। १।।
कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपी मनहरम्।

पीत बस्तर गरुड़ वाहन चरण सुख नित सागरम् ।। २ ।।
करत केलि कलोल निशिदिन कुञ्ज भवन उजागरम् ।
अचल अमल अडोल निश्चय पुरुषोत्तम अपरापरम् ।। ३ ।।
दीनानाथ दयाल गिरिधर कंस हिरणाकुशहरम् ।
गल फूलमाल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवम् ।। ४ ।।
वंशीधर वसुदेव छलिया बलि छल्यो श्रीवामनम् ।
जल डूबते गज राखि लीनो लंक छेद्यो रावणम् ।। ५ ।।
सप्त द्वीप नव खण्ड चौदह भुवन कीनो इक पलम् ।
द्रोपदी की लाज राखी कहां लौं उपमाकरम् ।। ६ ।।
दीनानाथ दयाल पूरण कामना करुणाकरम् ।
कविदत्त दास विलास निशिदिन नाम जप नित नागरम् ।। ७ ।।
प्रथम गुरु के चरण वन्दौं यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवितं शिवशंकरम् ।। ८ ।।
श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव यदुपतिम् ।
श्री राम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवम् ।। ९ ।।
श्री रामकृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्री वामनम् ।
कच्छ मच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम् ।। १० ।।
मथुरा में केशव राय विराजे गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन गोपीनाथ गोविन्द जी ।। ११ ।।
यत्र मथुरा यत्र गोकुल जहां श्री पति अवतरे ;
धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखा वरे ।। १२ ।।
नवनीत नागर करत निरतन शिव विरञ्चि मन मोहितम् ।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा बाल अद्भुत सुन्दरम् ।। १३ ।।
ग्वाल बाल सब सखा विराजे संग राधे वामनम् ।
बंशी बट तट निकट यमुना मुरली टेर सुनावनम् ।। १४ ।।
भज राधे रघुवंश उत्तम परम राजकुमार श्री ।
सीता के पति भगत निगमन जगत प्राण अधार जी ।। १५ ।।
जनक राजा पन को राखि धनुष बाण चढ़ावहीं ।
सती सीता नाम जाको श्री रामचन्द्र प्रमाणहीं ।। १६ ।।
जन्म मथुरा खेल गोकुल नन्द के हृदि नन्दनम् ।
बाल लीला पतित पावन देवकी वसुदेवकम् ।। १७ ।।
श्री कृष्ण कलिमल हरण जाके जो भजे हरि चरण को ।
भक्ति अपनी देहु माधव भवसागर के तरण को ।। १८ ।।
जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारिका के नाथ श्री पति केशवं प्रणमाम्यहम् ।। १९ ।।

श्री कृष्ण अष्टपद पढ़त निशि दिन विष्णु लोक स गच्छते ।
श्री गुरु रामानन्द अवतार स्वामी कविदत्त ये भाषते ।। २० ।।

श्री राम

श्री रामचन्द्र लाखों-करोड़ों भारत वासियों के आराध्य हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में वे पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध हैं, उनका चरित्र, उनकी मर्यादा, उनकी कार्य शैली सभी कुछ अनुकरणीय है ।

जीवन में उदात्त भावनाओं की वृद्धि तथा मानसिक सुख शांति के लिए श्री राम से सम्बन्धित स्तोत्र प्रत्येक भारतीय की पूजा का आवश्यक अंग है ।

श्री राम चालीसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी ।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ।।
निशिदिन ध्यान धरे जो कोई ।
तासम भक्त और नहिं होई ।।
ध्यान धरे शिवजी मन मांहीं ।
ब्रह्म इन्द्र पार नहिं पाहीं ।।
जय जय जय रघुनाथ कृपाला ।
सदा करो सन्तन प्रतिपाला ।।
दूत तुहार वीर हनुमाना ।
जासु प्रभाव तिहूंपुर जाना ।।
तव भुजदण्ड प्रचण्ड कृपाला ।।
रावण मारि सुरन प्रतिपाला ।।
तुम अनाथ के नाथ गुसांई ।
दीनन के हो सदा सहाई ।।
ब्रह्मादिक तव पार न पावै ।
सदा ईश तुम्हरो गुण गावै ।।
चारि वेद भरत है साखी ।
तुम भक्तन की लज्जा राखी ।।
गुण गावत शारद मन माहीं ।
सुरपति ताको पार न पाहीं ।।
नाम तुम्हार लेय जो कोई ।
ता सम धन्य और नहि होई ।।
राम नाम है अपरम्पारा ।
चारिहु वेदन जाहि पुकारा ।।
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हों ।
तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हो ।।
शेष रटत नित नाम तुम्हारा ।
महि को भार शीश पर धारा ।।
फूल समान रहत सो भारा ।
पावत कोउ न तुम्हारो पारा ।।

भरत नाम तुम्हरो उर धारो ।
तासो कबहुं न रण में हारो ।।
नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा ।
सुमिरत होत शत्रुकर नाशा ।।
लखन तुम्हारो आज्ञाकारी ।
सदा करत सन्तन रखवारी ।।
ताते रण जीते नहिं कोई ।
युद्ध जुरे यमहूं किन होई ।।
महालक्ष्मी सो धरि अवतारा ।
सब विधि करत पाप को छारा ।।
सीता नाम पुनीता गायो ।
भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो ।।
घट ते प्रगट भई सो आई ।
जाको देखत चन्द्र लजाई ।।
सो तुम्हरो नित पांव पलोटत ।
नवों सिद्धि चरणन में लोटत ।।
सिद्धि अठारह मंगलकारी ।
सो तुम पर जावें बलिहारी ।।
औरहु जे अनेक प्रभुताई ।
सो सीता-पति तुम्हहिं बनाई ।।
इच्छा ते कोटिन संसारा ।
रचत न लागत पलकी बारा ।।
जो तुम्हरे चरणन चित लावै ।
ताकी मुक्ति अवश हो जावै ।।
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा ।
निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा ।।
सत्य सत्य प्रभु त्रिभुवन स्वामी ।
सत्य सनातन अन्तर्यामी ।।
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै ।
सो निश्चय चारों फल पावै ।।
सत्य शपथ गौरी पति कीन्हीं ।
तुमने भक्तहिं सब सिधि दीन्हीं ।।
सुनहु नाथ तुम तात हमारे ।
तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे ।।
तुमहिं देवकुल देव हमारे ।
तुम सुकदेव प्राण के प्यारे ।।
जो कुछ हो सो तुमहिं राजा ।
जय जय जय प्रभु राखो लाजा ।।
राम आतमा पोषन हारे ।
जय जय जय दशरत्थ दुलारे ।।
ज्ञाने हृदया ज्ञान स्वरूपा ।
नमो नमो जय जगपति भूपा ।।
धन्य धन्य तव धन्य प्रतापा ।
नाम तुम्हार हरत सन्तापा ।।
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया ।
बाजी दुन्दुभी शंख बजाया ।।
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन ।
तुमही हमरे हो तन मन धन ।।
याको पाठ करे जो कोई ।
ज्ञान प्रगट ताके उर होई ।।
आवागमन मिटै तिहि केरा ।
सत्य वचन माने शिव मेरा ।।
और आस तन में जो होई ।
मन वांछित फल पावै सोई ।।
तीनहुं काल ध्यान जो लावै ।
तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै ।।
साग पत्र जो भोग लगावैं ।
सो नर सकल सिद्धता पावै ।।
अन्त समय रघुवर पुर जाई ।
जहां जन्म हरि भक्त कहाई ।।
श्री हरिदास कहे अरु गावें ।
सो वैकुण्ठ धाम को पावै ।।

दोहा

सात दिवस जो नेमकर, पाठ करै चितलाय ।
हरिदास हरि कृपा से, अवस मुक्ति को पाय ।।
राम चालीसा जो पढ़े, रामचरण चितलाय ।
जो इच्छा मनमें करे, सकल सिद्ध हो जाय ।।

हनुमान

श्री अंजनीनन्दन पवन पुत्र हनुमान लाखों लाखों भारतवासियों के आराध्य है, इनकी साधना से जीवन के सारे पाप-ताप दूर होकर जीवन सुखी और सम्पन्न हो जाता है।

आगे भगवान बजरंगबली के दो सरल स्तोत्र दे रहा हूं, यद्यपि दोनों सरल भाषा में महात्मा तुलसीदास रचित है, परन्तु इनका प्रभाव मन्त्रों से भी ज्यादा तीव्र वेगवान और प्रभावपूर्ण है।

साधना विधि

अपने घर के एकान्त कक्ष में भगवान बजरंगबली की मूर्ति या चित्र स्थापित करें, लकड़ी का तख्ता या बाजोट रख कर उस पर लाल कपड़ा बिछा दे, इसके ऊपर हनुमान की मूर्ति या चित्र मंगलवार के दिन प्रातः सात बजे के लगभग स्थापित करें, हनुमान का मुंह दक्षिण की ओर हो।

हनुमान से सम्बन्धित किसी भी साधना में साधक को निम्न तथ्यों का पालन करना चाहिए—

(१) पूरे साधनाकाल में ब्रह्मचर्य से रहे (२) जमीन पर सोवे (३) एक समय भोजन करे (४) साधना समय में लाल धोती धारण करे (५) साधनाकाल में हजामत या क्षौर कर्म आदि न करे (६) साधना समय में हनुमान के सामने तेल का दीपक जलता रहे (७) हनुमान को गुड़ का भोग लगाया जाता है (८) किसी भी प्रकार का आसन प्रयोग में लाया जा सकता है।

विषय

हनुमान साधना जीवन की प्रत्येक समस्या को मिटाने में सहायक है, विशेषकर निम्न कार्यों के लिए तो हनुमान साधना शीघ्र फलदायक है—

(१) कारागार मुक्ति के लिए (२) आकस्मिक विपत्ति को दूर करने के लिए (३) बीमारी समाप्त करने के लिए (४) शत्रु परास्त करने के लिए (५) दैहिक दैविक पीड़ा शांत करने के लिए (६) भूत पिशाच भगाने के लिए (७) बच्चों की रक्षा के लिए (८) गर्भ रक्षा के लिए (९) जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा दूर करने के लिए।

प्रयोग

सबसे पहले हनुमान को जल से स्नान करा दे, तथा सिन्दूर में तेल मिलाकर उससे हनुमान

का तिलक करे, फिर हाथ में जल लेकर अपनी विपत्ति का वर्णन करे, और उसे दूर करने का निवेदन कर जल छोड़ दे, फिर घी गुड़ का भोग लगावे,तथा तेल का दीपक लगाकर पाठ प्रारम्भ कर दे।

हनुमान चालीसा

यह तुलसीदास कृत अद्भुत प्रभावपूर्ण स्तुति है, जो मन्त्र के समान ही वेगमय एवं प्रभावपूर्ण है।

अनुष्ठान के रूप में इसके नित्य एक सौ एक पाठ रात्रि को एक आसन पर बैठ कर करने चाहिए, चालीस दिनों तक ऐसा करने पर सम्बन्धित मनोवांछित कार्य अवश्य ही पूरा होता है।

४१ वें दिन किसी एक अविवाहित ब्राह्मण-पुत्र को भोजन कराकर दान दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। इस प्रकार अनुष्ठान सम्पन्न माना जाता है।

संकट मोचन स्तोत्र

यह भी संत तुलसीदास रचित अद्भुत प्रभावपूर्ण स्तुति मन्त्र है, तथा किसी भी प्रकार के संकट को दूर करने में अद्भुत रूप से सफल हैं, साधना अनुष्ठान विधि ऊपर लिखे अनुसार ही है।

बजरंग बाण

यह एक अद्भुत स्तोत्र है, तथा इसका प्रभाव कभी भी खाली नहीं जाता, किसी भी प्रकार के संकट नाश के लिए इसका अनुष्ठान किया जा सकता है, इसकी अनुष्ठान विधि भी ऊपर लिखे अनुसार ही है।

विशेष

यदि अनुष्ठान न कर नित्य मात्र एक पाठ भी किया जाय, तो उसके जीवन में कभी भी कोई बाधा, परेशानी या दुःख नहीं आता, महिलाओं को हनुमान अनुष्ठान नहीं करना चाहिए, क्योंकि चालीस दिनों के भीतर ही उनके रजस्वला समय आ जाता हैं। हां, महिलाएं शुद्धता से नित्य एक या इक्कीस पाठ इनके कर सकती हैं।

मेरे जीवन में ऐसे सैकड़ों साधकों एवं शिष्यों के अनुभव आये है, जिनके असंभव से असंभव कार्य भी बजरंग बाण या हनुमान चालीसा के नित्य एक पाठ से पूरे हुए हैं,प्रत्येक साधक और गृहस्थ को अपनी नित्य पूजा में हनुमान चालीसा तथा बजरंग बाण का एक पाठ अवश्य ही रखना चाहिए, जिससे उनके जीवन में किसी प्रकार को कोई न्यूनता न रहे।

वस्तुतः हनुमान से सम्बन्धित तीनों ही स्तोत्र अद्भुत प्रभावपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक हैं—

❋ श्री हनुमान चालीसा ❋

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र योजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक ते कांपै ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस वर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को भावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुवर पुर जाई ।
जहां जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदी महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ।।

।। इति ।।

बजरंग–बाण

बाल समय रवि भक्षि लियो तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो ।।
देवन आनि करी विनती तब
छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।। १ ।।
बालि को त्रास कपीस बसै गिरि
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब
चाहिये कौन बिचार बिचारो ।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो ।। को ।। २ ।।
अंगद के संग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो ।

जीवत ना बचिहौ हम सों जु
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।।
हेरि थके तट सिंधु तबै ।
लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ।। को ०-३ ।।
रावन त्रास दई सिय को सब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो ।।
चाहत सीय असोक सों आगि जु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।। ०-४ ।।
बान लग्यो उर लछिमन के तब
प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत
तबै गिरी द्रोन सु बीर उबारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारो ।। को ०-५ ।।
रावन जुद्ध अजान कियो तब
नाग कि फांस सबै सिर डारो ।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो ।। ०-६ ।।
बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पताल सिधारो
देबिहिं पूजि भली बिधि सो बलि
देउ सबै मिली मन्त्र बिचारो ।।
जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।। को ०-७ ।।
काज किये बड़ देवन के तुम
बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसों नहिं जात है टारो ।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो ।। को ०-८ ।।

दोहा— लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।।

।। इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।।

— ० —

संकट मोचन स्तोत्र

काहे बिलम्ब करो अञ्जनि सुत, संकट बेगि में होहु सहाई ।।
नहिं जप जोग न ध्यान करो, तुम्हरे पद पङ्कज में सिर नाई ।
खेलत खात अचेत फिरौं, ममता मद लोभ रहे तन छाई ।।
हेरत पन्थ रहो निसि बासर, कारण कौन बिलम्ब लगाई ।
काहे बिलम्ब करो अंजनी सुत संकट बेगि में होहु सहाई ।।१।।

जो अब आरत कोई पुकारत, राखि लेहु यम फांस बचाई ।
रावण गर्व हने दस मस्तक, घेरि लंगूर की कोट बनाई ।।
निशिचर मारि बिध्वंस कियो, घत लाई लंगूर में लंक जराई । काहे० ।।२।।

जाई पाताल हने अहिरावण, देबहिं टारि पताल पठाई।
वे भुज काह भये हनुमन्त, लियो जिहिते सब सन्त बचाई।।
औगुन मोर क्षमा करु साहेब, जानि परी भुज की प्रभुताई। काहे० ।।३।।

भौन अंधार बिना घृत दीपक, टूटि परो यम त्रास दिखाई।
काहि पुकार करो यहि औसर, भूलि गई जिय की चतुराई।।
गाढ़ परे सुखदेत तुही, प्रभु रोषित देखि के जात डेराई। काहे० ।।४।।

छोड़े है मात-पिता परिवार, पराई गहीं शरणागत आई।
जन्म अकारथ जात चले, हनुमान बिना नहिं कोउ सहाई।।
मझधार ही मम बेड़ो अड़ो, भवसागर पार लगावो गोसांई। काहे० ।।५।।

पूज कोउ कृत कासी गयो महँ, कोऊ रहे सुर ध्यान लगाई।
जानत शेष महेश गणेश सुरेश, सदा तुम्हरे गुन गाई।।
औ अवलम्बन आस छुटे सब त्रास छुटे हरि भक्ति दृढ़ाई। काहे० ।।६।।

सन्तन के दुख देखि सहै नहिं, जान परी बड़ी वार लगाई।
एक अचम्भो लखो घर में कछु कौतुक देखि रहा नहिं जाई।।
ताल मृदंग बजावत गावत आवत जात महा दुख पाई। काहे० ।।७।।

मूरति एक अनूप सुहावन का वरणो वह सुन्दरताई।
कुंचित केस कपोल विराजत कौन कली बिच भौंर लुभाई।।
गरजै घनघोर घमण्ड घटा बरसे जल अमृत देखि सोहाई। काहे० ।।८।।

केतिक क्रूर बसै नभ सूरज सूरसती रहैं ध्यान लगाई।
भूपन भौन बिचित्र सोहावन बैर बिना प्रभु बेनु बजाई।।
किंकिनि शब्द सुनै जग मोहित हीरा जड़े बहु झालर लाई। काहे० ।।९।।

सन्तन के दुख देखि सहो नहिं जान परी बड़ी बार लगाई।
सन्त समाज सबै जब तें सुरलोक चले प्रभु के गुण गाई।।
केतिक क्रूर बसै जग में भगवन्त बिना नहिं कोऊ सहाई। काहे० ।।१०।।

नहिं कुछ वेद पढ़ो नहिं ध्यान धरो बन मांहि इकन्तहि जाई।
केवल कृष्ण भज्यो अभिअन्तर धन्य गुरु जिन पंथ दिखाई।।
स्वारथ जन्म भये तिनके जिन्हको हनुमन्त लियो अपनाई। काहे० ।।११।।

का बरणो करनी तरनी जल मध्य पड़ी धरि आर लगाई ।
जाहि जपे भव फन्द कटै अब पन्थ सोई तुम देहु दिखाई ।।
हेरि हिये मन में गुनिये मन छूटि गयी जिय काह समाई । काहे० ।।१२।।

सांस छले पछितात सोई तन जात चले अनुमान बड़ाई ।
यह जीवन जन्म है, थोरे दिना मोहिं का करिहै यम त्रास दिखाई ।।
काहि कहैं कलऊ व्यवहार करें छल छिद्र में जन्म गवांई । काहे० ।।१३।।

रे मन चोर तू सोच कहां, अब का करिहैं यम त्रास दिखाई ।
जीव दया करु साधु की संगत लेहो अमरपद लोक बड़ाई ।।
रहा न औसर जात चले भजिले भगवन्त धनुर्धर राई ।
काहे बिलम्ब करो अंजनी सुत संकट बेगि में होहु सहाई । कोहे० ।।१४।।

।। इति श्री तुलसीदासकृत सङ्कट मोचन स्तोत्र सम्पूर्णम् ।।

भैरव

भैरव को भगवान शंकर का अवतार माना गया है, भैरव की साधना विपत्ति नाश के लिए तथा सभी प्रकार से सुरक्षा तथा उन्नति के लिए आवश्यक मानी गई है ।

देवी की साधना से पहले तो भैरव साधना आवश्यक है ही,. यों भी यदि नित्य भैरव-स्तुति की जाय तो जीवन में किसी प्रकार की तकलीफ, शत्रु-भय या बीमारी नहीं आती ।

साधना के लिए भैरव को दक्षिण की तरफ मुंह करके लकड़ी के पट्टे पर नीला कपड़ा बिछाकर स्थापित करना चाहिये, भैरव यन्त्र या भैरव चित्र आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, इसे योग्य विद्वान से मन्त्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त करवा देना चाहिए, भैरव को नीला वस्त्र ही समर्पित करना चाहिए तथा उन्हें तेल और सिन्दूर लगाना उचित माना गया है ।

इनके सामने गुग्गुल का धूप तथा तेल का दीपक लगाना उचित है, नैवेद्य के लिए तेल में पकाया हुआ गुड़ तथा आटा एवं गुड़ द्वारा निर्मित पुवा या गुलगुला शास्त्रोचित है ।

किसी भी मंगलवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है, और यदि नित्य १०१ पाठ भैरव चालीसा के किए जांय, तो चालीस दिन होते-होते वह कार्य अवश्य ही सफल हो जाता है ।

पर यदि अनुष्ठान न किया जाय तब भी आकस्मिक विपत्तियों के नाश के लिए नित्य एक बार भैरव चालीसा का पाठ करना अनुकूल माना गया है ।

यदि घर में कोई बीमार हो तो शुद्ध जल गिलास में लेकर उसमें लकड़ी घुमाते हुए भैरव चालीसा का एक बार पाठ कर वह पानी रोगी को पिला दिया जाय तो उसी क्षण रोगी को आराम होने लग जाता है ।

वस्तुत: भैरव आज के युग के महत्वपूर्ण और शीघ्र प्रभाव युक्त देवता हैं, शंकर के अवतार हैं, और इनसे सम्बन्धित साधना, अनुष्ठान या पाठ सभी दष्टियों से शुभ एवं अनुकूल माना गया है ।

❀ श्री भैरव चालीसा ❀

विश्वनाथ को सुमिर मन, धर गणेश का ध्यान ।
भैरव चालीसा पढ़ूं, कृपा करहु भगवान ।।

चौपाई

जय जय श्री काली के लाला ।
रहो दास पर सदा दयाला ।।
भैरव भीषण भीम कपाली ।
क्रोध वक्त्र लोचन में लाली ।।
कर त्रिशूल है कठिन कराला ।
गले में प्रभु मुंडन की माला ।।
कृष्ण रूप धर वर्ण विशाला ।
पीकर मद रहता मतवाला ।।
रुद्र बटुक भक्तन के संगी ।
प्रेतनाथ भूतेश भुजंगी ।।
त्रैल तेस है नाम तुम्हारा ।
चक्रदण्ड अमरेश पियारा ।।
शेखर चन्द्र कपाल विराजै ।
स्वान सवारी पै प्रभु गाजै ।।
शिव नकुलेश चण्ड हो स्वामी ।
बैजनाथ प्रभु नमो नमामि ।।
अश्वनाथ क्रोधेश बखाने ।
भैरों काल जगत ने जाने ।।
गायत्री कहैं निमिष दिगम्बर ।
जगन्नाथ उन्नत आडम्बर ।।
क्षेत्रपाल दशपाणि कहाये ।
मंजुल उमानन्द कहलाये ।।
चक्रनाथ भक्तन हितकारी ।
कहैं त्रयम्बक सब नर-नारी ।।
संहारक सुनन्द तव नामा ।
करहु भक्त के पूरन कामा ।।
नाथ पिशाचन के हो प्यारे ।
संकट मेटहु सकल हमारे ।।
कृत्यायु सुन्दर आनन्दा ।
भक्त जनन के काटहु फन्दा ।।
कारण लम्ब आप भय भंजन ।
नमो नाथ मैं जनमन रंजन ।।
हो तुम मेष त्रिलोचन नाथा ।
भक्त चरण में नावत माथा ।।
त्वं असितांग रुद्र के लाला ।
महाकाल काली के लाला ।।
ताप मोचनं अरिदल नासा ।
भाल चन्द्रमा करहि प्रकाशा ।।
श्वेतकाल अरु लाल शरीरा ।
मस्तक मुकुट शीश पर चीरा ।।
काली के लाला बलधारी ।
कहां तक शोभा कहहुँ तुम्हारी ।।
शंकर के अवतार कृपाला ।
रहो चकाचक पी मद प्याला ।।
काशी के कुतवाल कहाओ ।
बटुकनाथ चेटक दिखलाओ ।।
रवि के दिन जन भोग लगावें ।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें ।।
दरशन करके भक्त सिहावें ।
गुड़ का पूवा भोग लगावें ।।

मठ में लटकत सुन्दर झाबा ।
सिद्ध कार्य कर भैरों बाबा ।।
नाथ आपका यश नहीं थोड़ा ।
कर में सुभग सुशोभित कोड़ा ।।
कटि घूंघरा सुरीले बाजत ।
कंचन के सिंहासन राजत ।।
नर नारी तब तुमको ध्यावें ।
मनवाँछित इच्छा फल पावें ।।
भोपा है आपके पुजारी ।
करे आरती सेवा भारी ।।
भैरव भात आपका गाऊं ।
बार बार पदशीश नवाऊं ।।
आप हि वारे छीजन धाये ।
ऐलादी ने रुदन मचाये ।।
बहिन त्यागि भाई कहुं चावैं ।
तो बिन को मोहि भात पिन्हावैं ।।
रोये बटुकनाथ करुणाकर ।
गरे हिवारे में तुम जाकर ।।
दुखित भई ऐलादी वाला ।
तब हर का सिंहासन हाला ।।
समय ब्याह का जिस दिन आया ।
प्रभु ने तुमको तुरत पठाया ।।
विष्णु कही मत विलम लगाओ ।
तीन दिवस भैरव तुम जाओ ।।
दल पठान संग लेकर आया ।
ऐलादी को भात पिन्हाया ।।
पूरन आस बहिन की कीन्हीं ।
सुर्ख चूंदरी सिर धर दीन्हीं ।।
भात भरा लोटे गुणग्राही ।
नमो नमामि अन्तर्यामी ।।
छीतरमल प्रभु तुम्हरा चेहरा ।
करे आपकी शरण बसेरा ।।

दोहा

जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार ।
कृपा दास पर कीजिये, शंकर के अवतार ।।
जो यह चालीसा पढ़े, प्रेम सहित सतबार ।
उस घर सर्वानन्द हो, वैभव बढ़े अपार ।।

— ✿ —

✻ श्री भैरवाष्टक ✻

भैरवनाथ करूं विनती,
शरणागति है अब दास कृपाला ।।
दयाल रहो अमरेश सदा
नकुलेश पड़ी गल मुण्डनमाला ।।
मैं जन दीन मलीन अधीन
दया करिये पीकर मदप्याला ।।
जानत हैं जग में तुमको
नरनारी सभी प्रभु दीन दयाला ।।१।।
शेखर प्रेतहु आप कहावत
भीषण मंजुल नाथ विशाला ।
वामन नाथ उजागर है प्रभु
आप उमापति के सुत लाला ।।
काज करो प्रभु लाज रखो,
अरदास करे जन हे कुतवाला ।

जानत है जग में तुमको
नरनारी सभी प्रभु दीनदयाला ।।२।।
भीम त्रिलोचन टेर सुनो,
अघमोचन नाथ कराय निहाला ।
संशय दूर करो जन को,
तुम होइ दयालु हरौ भ्रमजाला ।
हे जन-तारण दैत्य-प्रहारण
क्लेश-निवारण हो तुम आला ।
जानत है जग में तुम को
नर-नारी सभी प्रभु दीनदयाला ।।३।।
पीवत धार सदा मद की,
प्रभु वाहन स्वान सुहावत काला ।
त्रैल त्रयम्बक ताप विमोचन
भाल शशी चमकै निरियाला ।।
भूत पिशाचन के बटु मालिक
सारहु कारज लेकर भाला ।
जानत है जग में तुमको
नर-नारि सभी प्रभु दीनदयाला ।।४।।
दीनन की तुम टेर सुनो
दसपाणि त्रिलोचन ढाल अड़ाला ।
शेष महेश सुरेश दिनेश
हमेशा रटें तुम को प्रतिपाला ।।
व्याल कराल दया करिहौ
घट अन्दर नाथ करो उजियाला ।
जानत हैं जग में तुम को
नर-नारी सभी प्रभु दीन दयाला ।।५।।
नाशत दैत्यन को पल में
तुम मार पछारत देत कसाला ।
मैं मतिमन्द न जानत हूं
दे ज्ञान मोहि काटो दृगजाला ।।
शेखर चन्द्र कृपा करि दो
वरदान महान बनारस वाला ।
जानत है जग में तुमको,
नर-नारी सभी प्रभु दीन दयाला ।।६।।
झांझ मृदंग बजे मठ में
नित गावत गान सुजान निराला ।
नाम जपें दिनरात मनावत
आसन बैठ मुनी मृगछाला ।।
चौसठ जोगिन नाचत है मठ
झालर शंख बजें खटताला ।
जानत हैं जग में तुमको
नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला ।।७।।
जाहिर हौ तिहुं लोकन में
अघ टारत आप कृपालु खुस्याला ।
ध्यावत है जन हार लिये
पहनावत है हरवा हरिमाला ।।
छीतर ध्यान धरै तुमरो
मम काटहु संकट नाथ कराला ।
जानत हैं जग में तुमको
नर-नारी सभी प्रभु दीन दयाला ।।८।।

शंकर

भूतभावन औढ़रदानी भगवान शंकर, सहज में ही प्रसन्न होकर भक्त को मनवांछित वरदान देने में समर्थ महादेव है, गहन साधना न कर यदि भक्त विगलित कण्ठ से उनकी स्तुति, आराधना या स्तोत्र पाठ भी करता है, तो उसके सारे मनोरथ सफल हो जाते हैं।

भगवान शिव के लीला चरित्र अपार एवं अनन्त है, पुरूष या स्त्री, बालक या वृद्ध, जो भी उन्हें पुकारता है, आशुतोष शंकर तत्क्षण प्रगट होकर उसे वरदान दे देते हैं।

ऐसे त्रिगुणातीत शिव के चरित्र व्रत, माहात्म्य आदि का विषद वर्णन शिव पुराण लिंग पुराण एवं अन्य ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में हैं।

आगे की पंक्तियों में शिव चालीसा आदि शिव स्तुतियाँ दी जा रही है, जो कि जन साधारण के लिए उपयोगी है, श्रद्धालु अपनी रूचि के अनुसार इनमें से चयन कर नित्य पाठ में सम्मिलित कर सकते हैं—

शिव चालीसा

अज अनादि अविगत अलख,अकल अतुल अविकार। बंदौ शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार।।१।।
आर्तहरण सुखकरण शुभ भक्ति-मुक्ति दातार। करो अनुग्रह दीन लखि अपनो बिरद विचार।।२।।
परयो पतित भवकूप महं सहज नरक आगार। सहज सुहृद पावन-पतित,सहजहि लेहु उबार।।३।।
पलक-पलक आशा भरयो, रहयो सुबाट निहार। करहु तुरंत स्वभाववश, नेक न करो अवार।।४।।

जय शिव शंकर औढ़रदानी।
जय गिरितनया मातु भवानी।।१।।
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर।
सर्वलोक ईश्वर-परमेश्वर।।२।।
सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता।
उपदेष्टा भर्ता अनुमन्ता।।३।।
पराशक्ति-पति अखिल-विश्वपति।
परब्रह्म परधाम परमगति।।४।।
सर्वातीत अनन्य सर्वगत।
निज स्वरूप महिमा में स्थित रत।।५।।
अंगभूति-भूषित श्मशानचर।
भुजंगभूषण चन्द्र मुकुटधर।।६।।

बृषवाहन नंदीगणनायक ।
अखिल विश्व के भाग्य-विधायक ॥७॥
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर ।
रिक्षचर्म ओढे गिरिजावर ॥८॥
कर त्रिशूल डमरूवर राजत ।
अभय वरद मुद्रा शुभ साजत ॥९॥
तनु कर्पूर गौर उज्ज्वलतम ।
पिङ्गल जटाजूट सिर उत्तम ॥१०॥
भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर ।
गल रुद्राक्ष-माल शोभाकर ॥११॥
विधि-हरि रुद्र त्रिविध वपुधारी ।
बने सृजन-पालन-लयकारी ॥१२॥
तुम हो नित्य दया के सागर ।
आशुतोष आनन्द उजागर ॥१३॥
अति दयालु भोले भण्डारी ।
अग जग सबके मंगलकारी ॥१४॥
सती-पार्वती के प्राणेश्वर ।
स्कन्द गणेश-जनक शिव सुखकर ॥१५॥
हरिहर एक रूप गुणशीला ।
करत स्वामि-सेवक की लीला ॥१६॥
रहते दोउ पूजत पुजवावत ।
पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत ॥१७॥
मारुति बन हरि सेवा कीन्ही ।
परमेश्वर बन सेवा लीन्ही ॥१८॥
जग-हित घोर हलाहल पीकर ।
बने सदाशिव नीलकंठ वर ॥१९॥
असुरासुर शुचि वरद शुभंकर ।
असुर निहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥२०॥
'नमः शिवाय' मन्त्र पञ्चाक्षर ।
जपत मिटत सब क्लेश भयंकर ॥२१॥
जो नर-नारि रटत शिव-शिव नित ।
तिनको शिव अति करत परमहित ॥२२॥
श्री कृष्ण तप कीन्हों भारी ।
ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी ॥२३॥
अर्जुन संग लड़े किरात बन ।
दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन ॥२४॥
भक्तन के सब कष्ट निवारे ।
दे निज भक्ति सबन्हि उबारे ॥२५॥
शङ्खचूड जालंधर मारे ।
दैत्य असंख्य प्राण हर नारे ॥२६॥
अन्धक को गणपति पद दीन्हों ।
शुक्र शुक्रपथ बाहर कीन्हों ॥२७॥
तेहि संजीवनि विद्या दीन्हीं ।
बाणासुर गणपति-गति कीन्हीं ॥२८॥
अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय ।
द्वादश ज्योतिर्लिंग ज्योतिर्मय ॥२९॥
भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा ।
अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥३०॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी ।
देत मुक्ति-पद करत अशोकी ॥३१॥
भक्त भगीरथ की रुचि राखी ।
जटा बसी गङ्गासुर साखी ॥३२॥
उरु अगस्त्य उपमन्यु ज्ञानी ।
ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥३३॥
शिव रहस्य शिव ज्ञान प्रचारक ।
शिवहिं परमप्रिय लोकोद्धारक ॥३४॥

इनके शुभ सुमिरन तें शंकर।
देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर ।।३५।।
अति उदार करुणा वरुणालय।
हरण दैन्य-दारिद्रय-दुःख-भय ।।३६।।
तुम्हरो भजन परम हितकारी।
विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ।।३७।।
बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं।
ते अलभ्य शिवपद को पावहिं ।।३८।।
भेदशून्य तुम सबके स्वामी।
सहज सुहृद सेवक अनुगामी ।।३९।।
जो जन शरण तुम्हारी आवत।
सकल दुरित तत्काल नशावत ।।४०।।

दोहा

वहन करौ तुम शीलवश,
निज जन को सबभार।
गनौ न अघ, अगजाति कछु,
सब विधि करौ संभार ।।१।।
तुम्हरो शील स्वभाव लखि,
जो न शरण तव होय।
तेहि सम कुटिल कुबुद्धि जन,
नहिं कुभाग्य जन कोय ।।२।।
दीन हीन अति मलिन मति,
मैं अघ-ओघ अपार।
कृपा-अनल प्रगटौ तुरत,
करौ पाप सब छार ।।३।।
कृपा-सुधा बरसाय पुनि,
शीतल करौ पवित्र।
राखौ पद कमलनि सदा,
हे कुपात्र के मित्र ! ।।४।।

प्रार्थना

इतना तो करना शंकर जब प्राण तन से निकले।
मुख कर रहा हो हर-हर, जब प्राण तन से निकले ।।
भागीरथी का तट हो, काशी का चिर मरघट हो।
शिव पारवती निकट हों, जब प्राण तन से निकले ।। १ ।।

शुभ श्वेत भस्म अंग हो, लिपटा हुआ भुजंग हो।
माता सती अर्धंग हो, जब प्राण तन से निकले ।। २ ।।
डमरू त्रिशूल कर हो, कटि में बाघम्बर हो।
बैठे भी वृषभ पर हों, जब प्राण तन ने निकले ।। ३ ।।

रुद्राक्ष की हो माला, शिव कण्ठ नयन ज्वाला।
गल में पड़ा कपाला, जब प्राण तन से निकले ।। ४ ।।

रुद्राक्ष मेरे गले हो, मस्तक पर बिल्व दल हो ।
मुख जाह्नवी का जल हो, जब प्राण तन से निकले ।। ५ ।।
यम दूत जब अड़े हों, श्री लाल शिव खड़े हों ।
हम ध्यान में पड़े हों, जब प्राण तन से निकले ।। ६ ।।

— ※ —

प्रणाम

शिव शंकर भोले भाले तुमको लाखों प्रणाम ।
कैलाश बसाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।

जटा जूट सिर ऊपर साजे, डमरू डम् डम् डमरू बाजे ।
चन्द्रकला मस्तक पर राजे, वाम विभागे शिवा विराजे ।।
गल भुजंग हैं काले तुमको, लाखों प्रणाम ।

शीश पे सोहे गंग की धारा, महिमा तुम्हरी अगम अपारा
जय महेश जय भव भय हारा जय करुणासागर करतारा ।
भस्म रमाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।

रुद्र माल गल भुजंग माला, कर त्रिशूल सोहे करताला ।
जयदेव जय जयति कृपाला, नीलकंठ कटि में मृगछाला ।।
कानन कुण्डल डाले तुमको [illegible]ें प्रणाम ।।

वृषभ वाहन अंग विभूति, देव के देवन निर्गुण रूपा ।।
निगम अगम शांतिमय सरूपा त्रयलोचन त्रिपुरारि अनूपा ।
कष्ट मिटाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।

शिवनाथ जय जय शिवशंकर केदारनाथ करुणा के सागर ।
बम बम भोले जय हर हर निराकार करुणा के सागर ।।
भक्तो को अपना ले तुमको लाखों प्रणाम ।।

❋

हो तो ऐसा हो

सदा शिव सर्व वरदाता दिगम्बर हो तो ऐसा हो।
हरे सब दुःख भक्तन के दयावर हो तो ऐसा हो॥

शिखर कैलाश के ऊपर कल्पतरुश्रों की छाया में।
रमे नित संग गिरजा के रमणधर हो तो ऐंसा हो॥

शीश पर गंग की धारा, सुहाने भाल में लोचन।
कला मस्तक में चन्दन की, मनोहर हो तो ऐसा हो॥

भयंकर जहर जब निकला क्षीर सागर के मथने से।
धरा सब कंठ में पीकर जो विषधर हो तो ऐसा हो॥

सिरों को काटकर श्रपने किया जब यज्ञ रावण ने।
दिया सब राज्य दुनियां का दिलावर हो तो ऐसा हो॥

किया नन्दी ने जा वन में कठिन तप काल के डर से।
बनाया खास गण श्रपना श्रमरकर हो तो ऐसा हो॥

बनाये बीच सागर में तीन पुर दैत्य सेना ने।
उड़ाये एक ही शर में त्रिपुरधर हो तो ऐसा हो॥

पिता के यज्ञ में जाकर तजि जब देह गिरिजा ने।
किया सब ध्वंस पलभर में भयंकर हो तो ऐसा हो॥

देव वर दैत्यगण सारे जपें नित नाम शंकर का।
वो ब्रह्मानन्द दुनियां में उजागर हो तो ऐसा हो॥

— ※ —

भोले शंकर

शीश गंग श्रर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत है, धरत ध्यान सुर सुखरासी॥

शीतल मन्द सुगन्ध पवन तह बैठे हैं शिव श्रविनासी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर राग रागिनी मधुरासी॥

यक्ष रक्ष भैरव जहं डोलत बोलत है, वन के वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करत है गुञ्जासी ।।

कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी ।
कामधेनु कोटिन जहं डोलत करत दुग्ध की वर्षा सी ।।

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिमरासी ।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित सेवत सदा प्रकृति-दासी ।।

ऋषि-मुनि देव दनुज नित सेवत गान-करत श्रुति गुणरासी ।
ब्रह्मा-विष्णु निहारत निसिदिन कछु शिव हमकूं फरमासी ।।

ऋद्धि के दाता शंकर स्वामी नित सत् चित् आनन्द के राशी ।
जिनके सुमरित ही कट जाती कठिन काल-यम की फांसी ।।

त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर प्रेम सहित जो नर गासी ।
दूर होय विपदा उस नरकी जन्म-जन्म शिवपद पासी ।।

कैलाशी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीजो ।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान कृपा कीजो ।।

तुम तो प्रभुजी सदा दयामय अवगुण मेरे सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमा कर शंकर किंकर की विनती सुनियो ।।

— ❦ —

शंकर शतनामावली

जय महादेव देवाधिदेव,
भोले शंकर शिव सुखराशी ।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर,
जय घृश्मेश्वर जय कैलाशी ।।
जय गंगाधर त्रिशूलधर शशिधर,
सर्वेश्वर जय अविनाशी ।
जय विश्वात्मन विभू विश्वनाथ,
जय उमानाथ काटो फांसी ।।
सर्व व्यापी अन्तर्यामी शिव,
रुद्र निरामय त्रयलोचन ।
भवभयहारी जय त्रिपुरारि,
जय मदन-दहन जय दुख-मोचन ।।
मृत्युञ्जय आशुतोष अघहर,
जय बैजनाथ जय वृषभध्वज ।

जय लोकनाथ जय मन्मथहारि,
जय जय महेश जय मृड जय अज ।।
जय गौरीपति जय चन्द्रमौलि,
जय नीलकण्ठ जय अभयंकर ।
त्रयताप हरो सब पाप हरो हर,
हाथ जोड़ ठाड़ो किंकर ।।
कालहु के काल जय महाकाल,
जय चण्डीश्वर जय सिद्धेश्वर ।
जय योगेश्वर जय गोपेश्वर,
जय निर्विकार जय नागेश्वर ।।
जय ब्रह्म-रूप ब्रह्मण्य-देव,
जय धूर्जटे अवढर दानी ।
जय घोरमन्यु जय ज्ञानात्मा,
सबने ही आन तेरी मानी ।।
जय जय सुरेश जय गिरिजापति,
जय दिशाध्यक्ष जय दिग्वसनम् ।
जय विरूपाक्ष कैवल्य-प्राप्त,
निर्वाण रूप, जय ईशानम् ।।
व्यालोपवीति जय वामदेव,
ओंकारेश्वर सब दुख-हरनं ।
हो प्रेमवश्य करुणामय प्रभु,
नित भक्तों के आनन्द करनं ।।
जय जय कपर्ति जय जय स्थाणु,
जय नर्मदेश जय ब्रह्मचारी
जय अमरनाथ जय सोमनाथ,
जय शूलपाणि जय कामारी ।।
बाघाम्बरधारी रुण्डधारी,
जय श्मशान-वासी बाबा ।
मधुरति मधुर चण्डाति चण्ड,
तेरा स्वरूप भोले बाबा ।।
पशुपति सुरपति निर्वाण रूप,
जय रवि शशि अनल नेत्रधारी ।
है शक्ति कहां जो गुण गावैं,
महिमा है तुम्हारी अतिभारी ।।
जय परमानन्द जय चिदानन्द,
आनन्दकन्द जय दियाधाम ।
दुनिया से सुनते आये हैं,
भक्तों के सारे सभी काम ।।
जय नन्दीश्वर जय प्रणतपाल,
जय शम्भु सनातन हर हर हर ।
पूरण समर्थ सर्वज्ञ सर्व,
जय त्रिपुण्डधारी हर हर हर ।।
कल्याण रूप और शांतरूप,
ताण्डव के हेतु हे डमरूधर ।
हर पाप क्लेश और दोष सभी,
त्रयताप दया करके सब हर ।।
शरणागत हे प्रभु त्राहि-त्राहि,
निज भक्ति देहु अरु करो अभय ।
जो नाम जपै यह प्रेम सहित,
उसको नहीं व्यापै कोई भय ।।
तेरा नाम मात्र ही जनम जनम के,
पाप भस्म कर देता है ।
हैं धन्य भाग्य उस मानव के जो,
इतने नाम नित लेता है ।।
हाथ जोड़कर के करूं, क्षमा करो सब चूक ।
लगी लगन ऐसो कछू, रह न सक्यो मैं मूक ।।
हमें भक्ति प्रभु दीजिये, अहो दया के धाम ।
चूक कभी होवे नहीं, जपूं निरन्तर नाम ।। ❀

भगवती दुर्गा

भगवती दुर्गा जन- जन की आराध्या हैं, मां हैं, दयालु और पर दुःख कातर हैं,शंकराचार्य ने विगलित कण्ठ से मां की स्तुति करते हुए कहा है,— "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति" मां ! बेटा तो कुपुत्र हो सकता है, पर मां तो कुमाता हो ही नहीं सकती, तुझे तो मेरे ऊपर दया करनी ही पड़ेगी ।

और यही 'मां' हमारी रक्षा करे, इसी मां से सम्बन्धित जन प्रचलित चालीसा शीघ्र प्रभावकारी स्तुति है ।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥ १ ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूं लोक फैली उजियारी ॥ २ ॥
शशि लिलार मुख महा विशाला ।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥ ३ ॥
रूप मातु को अधिक सुहावै ।
दरस करत जन अति सुख पावै ॥ ४ ॥
तुम संसार शक्ति लय कीना ।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥ ५ ॥
अन्नपूर्णा होइ जग पाला ।
तुमहीं आदि सुन्दरी बाला ॥ ६ ॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी ।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥ ७ ॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं ।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥ ८ ॥
रूप सरस्वती को तुम धारा ।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥ ९ ॥
धरो रूप नरसिंह को अम्बा ।
परगट भई फाड़ के खम्बा ॥ १० ॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो ।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥ ११ ॥
लक्ष्मी रूप धरा जग माहीं ।
श्री नारायण अंग समाही ॥ १२ ॥
क्षीर-सिंधु में करत बिलासा ।
दयासिंधु दीजै मन आसा ॥ १३ ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी ।
महिमा अमित न जात बखानी ॥ १४ ॥

मातंगी धूमावति माता ।
भुवनेश्वरि बगला सुखदाता ॥ १५ ॥
श्री भैरव तारा जगतरणी ।
छिन्नभाल भव दुख निवारणी ॥ १६ ॥
केहरि वाहन सोह भवानी ।
लंगुर वीर चलत अगवानी ॥ १७ ॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै ।
जाको देखि काल डर भाजै ॥ १८ ॥
सोहे अस्त्र और तिरसूला ।
जाते उठत शत्रु हिय सूला ॥ १९ ॥
नगर कोटि में तुम हीं विराजत ।
तिहूं लोक में डंका बाजत ॥ २० ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे ।
रक्त बीज शंखन संहारे ॥ २१ ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी ।
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥ २२ ॥
रूप कराल कालि को धारा ।
सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥ २३ ॥
परी भीड़ सन्तन पर जब जब ।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥ २४ ॥
अमरपुरी अरुवा सब लोका ।
तव महिमा सब रहे अशोका ॥ २५ ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ।
तुम्हें सदा पूजें नर नारी ॥ २६ ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावै ।
दुख दरिद्र निकट नहि आवै ॥ २७ ॥
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई ।
जन्म मरण ताकर छुटि जाई ॥ २८ ॥
योगी सुर मुनि कहत पुकारी ।
योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी ॥ २९ ॥
शंकर आचारज तप कीनो ।
काम क्रोध जीति सब लीनो ॥ ३० ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को ।
काहू काल नहिं सुमिरे तिनको ॥ ३१ ॥
शक्ति रूप को मरम न पाये ।
शक्ति गई तब मन पछताये ॥ ३२ ॥
शरणागत होइ कीति बखानी ।
जै-जै-जै जगदम्ब भवानी ॥ ३३ ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दई शक्ति नहिं कीन्ह विलम्बा ॥ ३४ ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ॥ ३५ ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै ।
रिपु मूरख मोहिं अति डरपावै ॥ ३६ ॥
शत्रूनाश कीजै महरानी ।
सुमिरौ इक चित तुम्हें भवानी ॥ ३७ ॥
करो कृपा हे मातु दयाला ।
ऋद्धि सिद्धि दे करौ निहाला ॥ ३८ ॥
जब लगि जियों दया फल पाऊँ ।
तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ ॥३९॥
दुर्गा चालीसा जो गावै ।
सब सुख भोगि परम पद पावै ॥४०॥
देवी दास शरण निज जानी ।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

अम्बा मां

सब ताप हर जग के भवानी, अम्बिके जगदम्बिके ।
हम सब उतारें आरती, जय अम्बिके जगदम्बिके ।।
मन में सघन तम पुंज है, दे दिव्य ज्योति मां हमें ।
निशि दिन जपें, निशि दिन रटें, जय अम्बिके जगदम्बिके ।
सब ताप हर जग के भवानी० ।।

दे ज्ञान ऐसा मां हमें, जग में न हम भटकें कभी ।
तव चरण का हो ध्यान, मां जय अम्बिके जगदम्बिके ।
सब ताप हर जग के भवानी० ।।

हमको न कुछ भी चाहिये, बस ज्ञान औ तव भक्ति दे ।
हो ध्यान तेरा ही सदा, जय अम्बिके जगदम्बिके ।
सब ताप हर जग के भवानी० ।।

सब ताप हर जग के भवानी, अम्बिके जगदम्बिके ।
हम सब उतारें आरती, जय अम्बिके जगदम्बिके ।
सब ताप हर जग के भवानी० ।।

संतान तिहारी

हम ना पण्डित और पुजारी, हम तो है सन्तान तुम्हारी ।
भटकें फिर क्यों अंधियारे में, हमको दे दो ज्योति तुम्हारी ।।
हम ना पूजा की विधि जाने, हम तो बस तुमको पहचाने ।
तोड़ दिया है, आरती बन्धन, जपते कटे उमरिया सारी ।।
हम ना पण्डित० ।।

हम क्यों शरण तुम्हारी आयें, जब तेरी सन्तान कहाएं ।
अंगुली पकड़ तुम्हारी चलते, हम को क्यों हो भारी ? ।।
हम ना पण्डित० ।।

सुख दुःख से हमको क्या लेना, तुझ से लेकर मुझ को देना ।
मुझ को तो बस एक ही चिन्ता, जाये कहीं न लाज तुम्हारी ।।
हम ना पण्डित० ।।

महा लक्ष्मी

'लक्ष्मी' आज के भौतिकवादी युग में प्रत्येक व्यक्ति की आराध्या है, जीवन के चारों भोगों में 'अर्थ' की विशेष महत्ता है ।

लक्ष्मी से सम्बन्धित स्तोत्र शीघ्र प्रभावकारी एवं अनुकूल फल प्रदान करने वाला है, प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने नित्य की पूजा, आराधना में लक्ष्मी से सम्बन्धित स्तोत्र को अवश्य स्थान दें ।

❀ श्री लक्ष्मी चालीसा ❀

दोहा

मातु लक्ष्मी कर कृपा, करहु हृदय में वास ।
मनोकामना सिद्ध कर, पुरवहु मेरी आस ॥
हाथ जोड़ विनती करूं, यही मोर अरदास ।
जगत जननि जगदम्बिका, सब विधि करो सुवास ॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही ।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही ॥ १ ॥
तुम समान नहि कोउ उपकारी ।
सब विधि पुरवहु आस हमारी ॥ २ ॥
जै जै जगत जननी जगदम्बा ।
सब की तुम ही हो अवलम्बा ॥ ३ ॥
तुम ही हो घट घट की वासी ।
विनती यही हमारी खासी ॥ ४ ॥
जय जननी जय सिन्धु कुमारी ।
दीनन की तुम हो हितकारी ॥ ५ ॥
विनवौं नित्य तुमहि महारानी ।
कृपा करो जग मातु भवानी ॥ ६ ॥
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी ।
सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥ ७ ॥
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी ।
जगत जननि विनती सुन मोरी ॥ ८ ॥
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता ।
संकट हरो हमारी माता ॥ ९ ॥
क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो ।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो ॥ १० ॥
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा ।
रूप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥ ११ ॥
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा ।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥ १२ ॥
तब तुम प्रकट जनकपुर माहीं ।
सेवा करी हृदय पुलकाहीं ॥ १३ ॥

अपनाया तोहि अन्तर्यामी ।
विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी ।। १४ ।।
तुम समान कोई शक्ति न जानी ।
कहां तक महिमा कहौं बखानी ।। १५ ।।
मन क्रम वचन करे सेवकाई ।
मन इच्छित वांछित फल पाई ।। १६ ।।
तजि छल कपट और चतुराई ।
पूजहिं विविध भांति मन लाई ।। १७ ।।
और हाल मैं कहौं बुझाई ।
जो यह पाठ करे मन लाई ।। १८ ।।
ताको कोई कष्ट नहिं होई ।
मन इच्छित पावै फल सोई ।। १९ ।।
त्राहि त्राहि जय दुख निवारिणि ।
त्रिविध ताप भव बन्धन हारिणि ।। २० ।।
जो यह चालीसा पढ़े सुनावै ।
ध्यान लगाकर सुने सुनावै ।। २१ ।।
ताको कोई न रोग सतावै ।
पुत्र आदि धन सम्पति पावै ।। २२ ।।
पुत्रहीन और सम्पति हीना ।
अन्धा बधिर कोढ़ी अति दीना ।। २३ ।।
विप्र बुलाय के पाठ करावे ।
शंका दिल में कछु नहीं लावे ।। २४ ।।
पाठ करावे दिन चालीसा ।
तापर कृपा करे गौरीशा ।। २५ ।।
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावे ।
कमी नहीं काहू की आवे ।। २६ ।।
बारह मास करे जो पूजा ।
ता समान धन्य नहीं दूजा ।। २७ ।।
प्रतिदिन पाठ करे मन माहीं ।
ता समान कोई जग में नाहीं ।। २८ ।।
बहु विधि मैं क्या करों बड़ाई ।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई ।। २९ ।।
करि विश्वास करे व्रत नेमा ।
होय सिद्ध उपजे उर प्रेमा ।। ३० ।।
जय जय जय लक्ष्मी महारानी ।
सब में व्यापक हो गुण खानी ।। ३१ ।
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं ।
तुम सम अन्य दयालु कोउ नाहीं ।। ३२ ।।
मुझ अनाथ की सुधि अब लीजै ।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ।। ३३ ।।
भूल चूक करि क्षमा हमारी ।
दरसन दीजै दशा निहारी ।। ३४ ।।
बिन दरसन व्याकुल अधिकारी ।
तुम बिन सब दुख पाते भारी ।। ३५ ।।
नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में ।
सब जानत हो अपने मन में ।। ३६ ।।
रूप चतुर्भुज करके धारण ।
कष्ट मोर अब करहु निवारण ।। ३७ ।।
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई ।
ज्ञान बुद्धि मोहिं नहिं अधिकाई ।। ३८ ।।

दोहा

त्राहि त्राहि दुख हारिणि, हरो बेगि सब त्रास ।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रुन का नास ।।
रामदास धर ध्यान नित, विनय करत कर जोरि ।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया का कोर ।।

।। इति लक्ष्मी चालीसा समाप्त ।।

आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसि दिन सेवत, हर विष्णु धाता ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता ।
सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ ।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता ।। ॐ ।।
तुम पाताल निवासिनि, तुमही शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता ।। ॐ ।।
जिस घर तुम रहती तहं, सब सद्‌गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ॐ ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता ।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता ।। ॐ ।।
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ।। ॐ ।।
महा लक्ष्मी जी की आरती जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ॐ ।।

❋

प्रातः स्मरणीय नाम

लक्ष्मी, कमला, मां श्री धनदा ।
विष्णु पत्नी धीरा, अरु अनदा ।।
'ऐं' बीजाक्षर 'श्रीं' मूलाक्षर ।
'ह्रीं' माँ धान्या, अष्टा आगर ।।
नित प्रति नाम जो इनका लेवे ।
मां लक्ष्मी सब कुछ दे देवे ।।

मां सरस्वती

जीवन की पूर्णता तभी सम्भव है, जब व्यक्ति लक्ष्मी से श्री सम्पन्न होने के साथ-साथ विद्वान पंडित और मेधावी हो, यह तभी सम्भव है, जब उस पर मां सरस्वती की कृपा हो।

घर में ऐसे संस्कार होने चाहिए कि प्रत्येक बालक बालिका प्रातःकाल उठकर निम्न सरस्वती स्तोत्र आदि का पाठ मां सरस्वती के चित्र के सामने करे —

श्री सरस्वती चालीसा

दोहा

जय जय मातु सरस्वती, बुधि विद्या की खानि।
हंसवाहिनी अम्बिके, जय जय वीणापाणि ।।

चौपाई

जय श्री सकल बुद्धि बल रासी।
जय सर्वज्ञा जय अविनासी ।।
जय जय जय वीणा कर धारिणि।
हंसवाहिनी जय मृदु हासिनि ।।
रूप चर्तुभुज तुम्हरो माता।
तीनि लोक मंह तुम विख्याता ।।
वाल्मीकि रह अत्याचारी।
तुम्हरी कृपा भये कवि भारी ।।
कालिदास भे अति विख्याता।
तुम्हरी दया अहै सब माता ।।
तुलसी सूर आदि विद्वाना।
तुम्हरो सुयश सदैव बखाना ।।
शरद इन्दु सम वदन तुम्हारो।
रूप चर्तुभुज अतिशय प्यारो ।।
कोटि सूर्य सम तन द्युति पावन।
राजहंस तुम्हरो शुचि वाहन ।।
कानन कुण्डल लोल सुहावहिं।
उर मणिमाल अनूप सुहावहिं ।।
वीणा पुस्तक अभय धारिणी।
जगन्मातु तुम जग विहारिणी ।।
ब्रह्मसुता अखण्ड अनूपा।
तुम्हरे गुण गावत सुर भूपा ।।
हरिहर करहिं तुम्हारो वन्दन।
वरुण कुबेर करहिं अभिनन्दन ।।
मधु कैटभ की मति हरि लीन्हीं।
पल महं वध करि तुम गति दीन्हीं ।।

तुमही रूप पार्वती धारेउ ।
दुर्गा रूप असुर संहारेउ ॥
काली रूप अनूप बनावा ।
रक्तबीज कहँ धरणि गिरावा ॥
आदि शशि तुम प्रगट भवानी ।
चराचर स्वामिनि कल्याणी ॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई ।
विद्या बुद्धि पावै जन सोई ॥
तुम साहित्य सरोवर वासिनी ।
ललित कला संगीत प्रकासिनि ।
चारु कल्पनाशीला माया ।
करहु सदा सेवक पर दाया
सरस्वती पूजन जो करहीं ।
निश्चिय ते भवसागर तरहीं ॥
विद्या बुद्धि मिलहि सुखदानी ।
जय जय जय शारदा भवानी ॥
तुम्हरी कृपा मिटहि सब पीरा ।
सेवक होंहि तुम्हारे धीरा ॥
तुम जननी ब्रह्माण्ड निवासिनि ।
सत रज तम गुण तीनि प्रकासिनि ॥
जगदम्बा तुम अगजग भरणी ।
बुद्धि विधात सुमंगल करणी ॥
दुःख दरिद्र सब जाहि नसाई ।
तुम्हरी कृपा न कछु कहि जाई ॥
परम पुनीत जगत आधारा ।
मातु अहै शुचि ज्ञान तुम्हारा ॥
सनकादिक नित गुण गण गावहि ।
नारद मुनि तब सुयश सुनावहि ॥

जा पर कृपा तुम्हारी होई ।
ता पर कृपा करे सब कोई ॥
शुभ्र वसन कर राजत कंगन ।
कटि किंकिनि मधुर नूपुर ध्वन ॥
आदिशक्ति तुम परम सयानी ।
महिमा वेद पुराण बखानी ॥
जग मंगल कर्त्री दुःख हर्त्री ।
सृष्टि स्वरूपा पालन कर्त्री ॥
तुम माया तुम प्रकृति सनातन ।
आदि सृष्टि तुम अतिशय पावन ॥
देव दनुज आरती उतारहि ॥
जय जय जय मातु उचारहि ॥
तुम्हरी कृपा मिलहि शुचि ज्ञाना ।
होइ सकल विधि अति कल्याना ॥
मैं सेवक तुम ही हो माता ।
सुयश तुम्हार भुवन विख्याता ॥
सब अपराध क्षमा करि दीजै ।
मातु शरण मो कहं तुम लीजै ॥
जो जन सेवा करहि तुम्हारी ।
तिन कहं कतहु नाहिं दुःख भारी ॥
जो यह पाठ करै चालीसा ।
तापर कृपा करहिं जगदीसा ॥

दोहा

जय शारद जय सरस्वती, जय माता जगदम्ब ।
दीन जानि कीजै कृपा, देहु दया अवलम्ब ॥

॥ इति श्री सरस्वती चालीसा सम्पूर्ण ॥

वीणा वादिनी

दोहा

गौरी नंदन गज बदन, प्रथम पूज्य संसार।
विघ्न हरण प्रसिद्ध है, मंगल के भण्डार ।।
विद्या का भण्डार है, बुद्धि की जड़ मात।
कारण दिव्य प्रकाश का, हरे अविद्या रात ।।

मात सरस्वती वीणा वाली।
योग मोक्ष दोनों की ताली ।।
नाम तेरे की ऊंची शान।
मूक को दे संस्कृत का ज्ञान ।।
जो बालक गुण गावे तेरा।
उसके कण्ठ करे श्रुति डेरा ।।
सेवक के संकट हर लेती।
वांछित वर प्रकट धर देती ।।
दुःख हरता शरणागत तेरी।
निज भक्ति दे इच्छा मेरी ।।
योग मंगल वीणा बुध राग।
चंचलता अरु चित्त को त्याग ।।
अनहद शब्द की वीणा शक्ति।
जाप अजप को दे दे भक्ति ।।
स्वर वींणा की कटे उदासी।
रसिकों को दे पद अविनाशी।
जड़ वैराग्य कीं काटे वीणा।
शोक रुधिर संग चाटे वीणा ।।
वीणा का स्वर प्रेमस्वरूपा।
हरती भक्तों का भव कूपा ।।

वृति उच्चाट की औषधि वीणा।
कृष्ण कुंज का भूषण कीना ।।
सरगम नाच जब वीणा राता।
नन्द नन्दन नटवर बन जाता ।।
नारद रसिक भी वीणा धरते।
प्रसन्नता से विश्व विचरते ।।
सुरपुर के गन्धर्व भी चेले।
तेरी पाठशाला में खेले ।।
होवे दीन न तेरे दास।
नीति आद्य में निश्चय पास ।।
पूजा तेरी पुण्य बल देती।
प्यासे मित्रों को जल देती ।।
लेख लिखे जीवों के तूं ही।
दुष्टों को दुर्मति दे तूं ही ।।
भक्ति तेरी स्वर्ग निशानी।
साक्षी निश्चय ईश्वरी बानी ।।
सेवा तेरी सब सुख मूला।
स्वप्न में वेध सके नहीं शूला ।।
ममता जाल से वह नहीं छूटे।
मूरख जो माता से रूठे ।।
जिसने आश्रय लिया तुम्हारा।
प्रेम तत्व का पन्थ संवारा ।।
तेतीस कोटि देव शरणागत।
ऋषि मुनि सब जन करते स्वागत ।।
दिव्य चक्षु दे पूरण दाती।
घृणा करें सब मूर्ख संघाती ।।

पशु समान नर जो विद्याहीन ।
पा न सके पदवी स्वाधीन ।।
सूर्य सहस्र न करे अन्धेरा ।
दिव्य प्रकाशी सेवक तेरा ।।
बांटे तूं प्रारब्ध खजाना ।
उत्तम विद्या सुमति ज्ञाना ।।
बिगड़े अंक को दूर कर देती ।
कर्महीन को उत्तम कर देती ।।
हंस वाहन का पावन ध्यान ।
परमहंस का देता ज्ञान ।।
दुभागी मोती नहीं चुगते ।
चुगने वाले रत्न भी चुगते ।।
एक हस्त जयमाला मां के ।
दूजे हस्त पुस्तक श्री मां के ।।
अरु दो हस्त धरे वीणा पर ।
ध्याता को दे अजर अमर वर ।।
चतुर भुजा के बाजू वन्द ।
वन्दन से करते निर्द्वन्द ।।
कानन कुण्डल दिव्य ज्योति ।
आंख त्रिकालज्ञ ही होती ।।
वाटिका तेरी में रहते मोर ।
पाप समूह के यह भी चोर ।।
कमल अष्टदल आसन तेरा ।
पूज्य विश्व प्रकाशन तेरा ।।
चरण तेरे मां दिव्य धाम ।
लाखों तुमको हैं प्रणाम ।।
हरि समान हर घट में रहती ।
प्रेम पुष्प से पूजन सहती ।।
मङ्गल भुवन अमङ्गल हरणा ।
तेरी शरण सब आनन्द करणा ।।
मन्त्र वर शुभ शारद शरणम् ।
आनन्द सागर भवभय हरणम् ।।
पद चालीसा यह जो गावे ।
वह जन वचन सिद्ध हो जावे ।।

दोहा

सुनती सुत की मात भी, दिव्य कानों के साथ ।
मुख से आशीर्वाद दे, मेरे सिर रख हाथ ।।
यह सरस्वती चालीसा, विरचित सुन्दर दास ।
नित्य पढ़त विद्या बढ़त, पूर्ण होत शुभ आस ।।

सरस्वती

प्रातः स्मरणीय

सरस्वती महादेवी, वीणा पुस्तक धारिणी ।
हंस वाहिनी समादृष्टा, विद्या दानं करो ममः ।।
तूं माता है, पिता तूं ही, तूं ही तो सब कुछ मेरी ।
जड़ता दूर कर माता, कृपा हो निश दिन तेरी ।।

मां काली

मां काली शत्रु संहारिणी एवं रोग शोक भय आदि का नाश करने वाली है, जीवन में जो भी बाधाएं हों, मात्र काली से सम्बन्धित स्तोत्र पाठ से ही वे बाधाएं समाप्त हो जाती है।

जो भी व्यक्ति नित्य पूजा में काली स्तोत्र का पाठ करता है, उसे जीवन में कभी भी रोग, शोक, भय, बाधा, शत्रु-हानि और कठिनाइयां नहीं आती।

वस्तुत: मां काली का स्तवन प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए आवश्यक है।

श्री कालिका स्तवन

अयि गिरि नन्दिनि नन्दित मेदिनि,
विश्व विनोदिनि नन्दिनुते।
गिरिवर विन्ध्यशिरोधिनिवासिनि,
विष्णु विलासिनि विष्णुनुते॥
भगवति हे शितकण्ठ कुटुम्बिनि,
भूरि कुटुम्बिनि भूत कृते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कपर्दिनि शैल सुते॥
अयि जगदम्ब कदम्ब वन प्रिय,
वासिनि वासिनि वासरते।
शिखर शिरोमणि तुङ्ग हिमालय,
शृङ्गनिजालय मध्यगते॥
मधुमधुरे मधुरे मधुरे,
मधुकैटभ भन्जनि रासरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥
सुर वर वर्षिणि दुर्धरर्धर्षिणि,
दुर्मुखमर्षिणि घोषरते।
दनुजन रोषिणि दुर्मुखशोषिणि,
भवभयमोचनि सिन्धु सुते॥
त्रिभुवन पोषिणि शङ्कर तोषिणि,
किल्विषमोचनि हर्षरते।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥
अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड,
वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते।
रिपुगजदण्डविदारण खण्ड,
पराक्रम चण्ड मठाधिपते॥
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः,
सुमनः सुमनोरम कान्तियुते ।
श्रुति रजनी रजनी रजनी,
रजनी रजनीकर चारुयुते ।।
सुनयन विभ्रमरभ्रमरभ्रमर,
भ्रमरभ्रमराधिपते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कर्पादिनि शैलसुते ।।
सुरललना प्रतिथे वितथे,
वितथेनियमोत्तर नृत्यरते ।
धुधुकट धुङ्गड़धुङ्गड़दायक,
दानकुतूहल गान रते ।।
धुंकुट धुंकुट धिद्धिमितिध्वनि,
धीर मृतङ्ग निनादरते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कर्पादिनि शैल सुते ।।
जय जय जाप्यजये जयशब्द,
परिस्तुति तत्पर विश्वनुते ।
झिरिण झिरिण झिरिण झिरिण झिंकृत नुपुर,
झिञ्जित मोहित भूत रते ।।

धुनटित नाटार्द्ध नटी नट नायक,
नायक नाटित नुपुरुते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कर्पादिनि शैलसुते ।।
महित महाहव मल्लिम तल्लिम,
दल्लित वल्लज भल्लरते ।
विरचित पल्लिक पुल्लिक मल्लिक,
झल्लिकमल्लिक वर्गयुते ।।
कृत कृत कुल्ल समुल्लस तारण,
तल्लिज वल्लव साललते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि,
रम्य कर्पादिनि शैलसुते ।।
या माता मधुकैटभ प्रमथिनी,
या महिषोन्मूलनी ।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्ड मथिनी
या रक्तबीजासिनी ।।
शक्तिः शुम्भ निशुम्भ दैत्यदलिनी
या सिद्धि लक्ष्मी परा ।
सा चण्डी नवकोटि शक्ति
संहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।।

卐

— श्री काली चालीसा —

दोहा

जय जय सीताराम के मध्य वासिनी अम्ब ।
देहु दरस जगदम्ब अब, करहु न मातु विलम्ब ।।

जय काली कंकाल मालिनी ।
जय मंगला महा कपालिनी ।।
रक्तबीज वध कारिणि माता ।।
सदा भक्त जन की सुखदाता ।।
शिरो मालिका भूषित अंगे ।
जय काली मधु मध्य तरंगे ।।
हर हृदयारविन्द सुविलासिनि ।

जय जगदम्ब सकल दुख नासिनि ।।
ह्रीं काली श्रीं महाकराली ।
क्रीं कल्याणी दक्षिणकाली ।।
कलावती जय जय विद्यावति ।
जय तारा सुन्दरी महामति ।।
देहु सुबुद्धि हरहु दुख द्वन्दा ।
काटहु सकल जगत के फन्दा ।।
जय ॐ कारे जय हुंकारे ।
महाशक्ति जय अपरम्पारे ।।
कमला कलियुग दर्प विनासिनि ।
सदा भक्तजन की भयनासिनी ।।
अब जगदम्ब न देर लगावहु ।
दुख दरिद्र सब मोर हटावहु ।।
जयति कराल काल की माता ।
कालानल समान द्युतिगाता ।।
जय शङ्करी सुरेशि सनातनि ।
कोटि सिद्धि कविमातु पुरातनि ।।
कपर्दिनी कलि कल्मष मोचनि ।
जय विकसित नव नलिन विलोचनि ।।
आनन्दा आनन्द निधाना ।
देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना ।।
करुणामृत सागरा कृपामयी ।
होहु दुष्ट जन कहँ तुम निर्दयी ।।
सकल जीव तोहि परम पियारे ।
सकल विश्व तव रहहिं अधारे ।।
प्रलय काल मँह नर्तन कारिणि ।
जग जननी सब जग की पालिनी ।।
महोदरी माहेश्वरि माया ।।
हिमगिरि सुता विश्व की छाया ।।
स्वच्छच्छरद मरद धुनिमांहीं ।
गरजत तुही और कोउ नांहीं ।।
स्फुरित मणिगणाकार प्रताने ।
तारागण तू व्योम बिताने ।।
श्रीधाने सन्तन हितकारिणि ।
अग्निपाणि तुम दुष्ट विदारिणि ।।
धूम्र विलोचन प्राण विमोचिनि ।
शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि ।।
सहसभुजी सरोरुह मालिनि ।
चामुण्डे मरघट की वासिनि ।।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी ।
संहारेउ महिषासुर पाजी ।।
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका ।
सब एके तुम आदि कालिका ।।
अजा एकरूपा बहुरूपा ।
अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा ।।
कलकत्ता के दक्षिण द्वारे ।
मूरति तोरि महेशि अपारे ।।
कादम्बरी पानरत श्यामा ।
जयमातंगि अनूप अकामा ।।
कमलासन वासिनि कमलायनि ।
जय जय श्यामा जय यामायनि ।।
रासरते नवरसे प्रकृति हे ।
जयति भक्त उर कुमति सुमति हे ।।
जयति ब्रह्म शिव विष्णु कामदा ।
जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ।।
जलथल नभ मण्डल में व्यापिनि ।
सौदामिनी मध्य आलापिनि ।।
झननन तच्छुमरिन रिन नादिनि ।

जय सरस्वति वीणा वादिनि ।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं चामुण्डा ।
कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा ।।
जय ब्रह्माण्ड सिद्ध कवि माता ।
कामख्या काली विख्याता ।।
हिंगुलाज विन्ध्याचल वासिनि ।
अट्टहासिनी अघगन नासिनि ।।
कहं लगि अस्तुति करहु अखण्डे ।
तू ब्रह्माण्ड शक्तिजित चण्डे ।।
करहु कृपा सब पै जगदम्बा ।
रहहिं निशंक तोर अवलम्बा ।।
चतुर्भुजी काली तुम श्यामा ।
रूप तुम्हार महा अभिरामा ।।
खड्ग और खप्पर कर सोहत ।
सुरनर मुनि सबको मन मोहत ।।
तुम्हरी कृपा पाव जो कोई ।
रोग शोक नहि ता कहं होई ।।
जो यह पाठ करै चालीसा ।
तापर कृपा करहिं गौरीशा ।।

दोहा

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब ।
सदाभक्तजन केरि दुख, हरहु मातु अविलम्ब ।।

।। इति श्री कालिका चालीसा सम्पूर्णम् ।।

आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा,
हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ।।
सुन जगदम्बा ! कर न विलम्बा,
सन्तन के भण्डार भरे ।
संतन प्रतिपाली, सदाखुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। १ ।।
बुद्धि विधाता, तु जगमाता,
मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा,
शरण तुम्हारी आन परे ।।
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर,
तब तब आय सहाय करे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। २ ।।
बार बार तैं सब जग मोह्यो,
तरुणी रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावे,
कहीं भार्या हो भोग करे ।
संतन सुखदाई सदा सहाई,
सन्त खड़े जयकार करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ३ ।।

ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन,
लिए भेंट तेरे द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता,
सिर सोने का छत्र धरे ।।
हुए शनिश्चर कुंकुमवरणी,
जबलांगुर पर हुकुम करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ४ ।।
कुपित होइ कर दानव मारे,
चण्डमुण्ड सब चूर करे ।
खड्ग त्रिशूल हाथ में लेकर,
रक्तबीज को भस्म करे ।।
शुंभ निशुंभ पछाड़े माता,
महिषासुर को पकड़ दरे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ५ ।।
जब तुम दयारूप को धारो,
पल में संकट दूर करे ।
आदितवार आदि का राजत,
अपने जन का कष्ट हरे ।
सौम्यस्वभाव धरा मेरी माता,
जन की अरज कबूल करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ६ ।।
सिंहपीठ पर चढ़ी भवानी,
अटल भवन में राज करे ।
दर्शन पावें मंगल गावें,
सिद्ध साधु चर भेंट धरे ।।
ध्यान धरत ही श्री काली को,
चार पदारथ हाथ परे ।।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ७ ।।
ब्रह्मा वेद पढ़ैं तेरे द्वारे,
शिवशंकर जी ध्यान धरें ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती,
चंवर कुबेर डुलाय करे ।।
जय जननी जय मातु भवानी,
अचल भवन में राज करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे ।। ८ ।।

क्षमा प्रार्थना

ब्रह्मा-विष्णु-शिव रूपिणी, पर ब्रह्म की शक्ति ।
मुझ सेवक को दीजियो, श्री चरणों की भक्ति ।।
मैं अपराधी नित्य का पापों का भण्डार ।
मुझ सेवक को कीजिये दुःख सागर से पार ।।

माता गायत्री

"गायत्री वेद मातरः" के अनुसार गायत्री चारों वेदों की मां है, भारत के जन-जन की आराध्या है, समस्त हिन्दू साधकों की प्राण स्वरूपा है और जीवन को दिव्य, उन्नत, श्रेष्ठ एवं तेजस्वी बनाने में सहायक है ।

प्रत्येक भारतीय-चाहे पुरुष हो या स्त्री, को अपनी नित्य पूजा में गायत्री स्तवन तो अवश्य ही रखना चाहिए, इसका नित्य पाठ करने से साधक का जीवन पवित्र और दिव्य बनता है, और स्वतः ही धीरे-धीरे कुण्डलिनी जाग्रत होने लगती है—

श्री गायत्री चालीसा

दोहा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं रूपिणि, जय जय ज्योति अखंड ।
गायत्री जय जयति जय, महिमा परम प्रचंड ।।

।। चौपाई ।।

भू र्भुवः स्वः युत तुम जननी ।
महाओघ कलि कल्मष दहनी ।।
चौबिस अक्षर रूप तुम्हारा ।
त्रिभुवन सुयश जासु विस्तारा ।।
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा ।
महिमा अहहि तुम्हार अनूपा ।।
हंसारूढ़ सितम्बर धारिणि ।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन विहारिणी ।।
अहै चतुर्भुज रूप सुहावन ।
दर्शन करत होत मन पावन ।।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला ।
धारण कीन्हेउ नयन विशाला ।।
शुभ्रवर्ण तुम देवि सयानी ।
सन्तत रहहु परम कल्याणी ।।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।
यश वरनै केहि विधि कहँ कोई ।।
तीनि रूप धरि त्रिभुवन माता ।
विचरण करहु सदा सुखदाता ।।
नाम अनेक असंख्य तुम्हारे ।
वेद पुराण 'नेति' कहि हारे ।।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।

अहै तुम्हारी ज्योति निराली ।।
शुक सनकादि शेष गुण गावहिं ।
नारद शारद ध्यान लगावहिं ।।
ब्रह्माणी तुम गौरी सीता ।
कीन्हेउ चरित अनेक पुनीता ।।
वेदमातृ तुम अलख अरूपा ।
सेवत तोहिं सदा सुरभूपा ।।
सृष्टि बीज अम्बिका भवानी ।
कालरात्रि तुम ही कल्याणी ।।
महिमा अपरम्पार बताई ।
सुरनर मुनि कोउ पार न पाई ।।
जय जय जय त्रिपदा भय नासिनि ।
जय विज्ञान विवेक प्रकासिनि ।।
जानत तुमहिं तुमहिं हुई जाई ।
यहै तुम्हार शक्ति अधिकाई ।।
ब्रह्म विचार देहु तुम जननी ।
ब्रह्म समान करहु दुख हरनी ।।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ।।
तुम कहं भजहि सदा चितलाई ।
सो नर मुक्ति पदारथ पाई ।।
ग्रह नक्षत्र आदि बहुतेरे ।
सो गतिवान तुम्हारे प्रेरे ।।
तुम्हरी कृपा पाई विधि हरिहर ।
जगतपूजा भे परम मनोहर ।।
जय जय जय अम्बिका भवानी ।
तुम सम और कोउ नहिं दानी ।।
तुम्हरो जाप करत दुख भाजहिं ।
ध्यान धरत सब सम्पति साजहिं ।।

अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता ।
तुम समर्थ गायत्री माता ।।
जो जन शरण तुम्हारी आवें ।
सो सब मनवांछित फल पावें ।।
करहिं त्रिसन्ध्य जाप जो माई ।
तिनकहँ पातक जाहि बिलाई ।।
जगत जननि तुम हो कल्याणी ।
इन्द्राणी लक्ष्मी शर्वाणी ।।
आदि शक्ति अग जग की माता ।
निज भक्तजन कहँ अति सुखदाता ।।
तुम्हरी कृपा मिटहिं दुख भारा ।
तुम्हरो चरित अनूप अपारा ।।
सुख सम्पति तिन के घर आवें ।
जो नर तुम्हरो ध्यान लगावें ।।
करुणामयि तुम होउ कृपाला ।
काटहु सदा मोर भ्रमजाला ।।
जय जय गायत्री महारानी ।
कीजिये कृपा मोहि जन जानी ।।
सब अपराध क्षमा करि दीजै ।
बालक जानि शरण निज लीजै ।।
बल बुधि विद्या देहु सुहावन ।
करहु अपावन कहँ तुम पावन ।।
जो यह पाठ करहिं चालीसा ।
तिन पै कृपा करहिं जगदीशा ।।
जो जन ध्यान तुम्हारे लावें ।
सो नित चारि पदारथ पावें ।।
जय जय जय अम्बिके तुम्हारी ।
जय गायत्री भ्रम दुःख हारी ।।

दोहा

गायत्री की कृपा सौ, सब कटि जांइ क्लेश । भक्त वत्सल्या मातु को, धरिये ध्यान हमेश ।।

।। इति श्री गायत्री चालीसा सम्पूर्ण ।।

❋

आरती

जय गायत्री माता, जय गायत्री माता ।
तुमको निशिदिन ध्यावै, हरिहर औ ज्ञाता ।। जय० ।।

आदि शक्ति तुम जननी, जग पालन कर्त्री ।
दु:ख शोक भय नाशिनि, क्लेश कलह हर्त्री ।। जय० ।।

ब्रह्मरूपिणी माता जय धातृ अम्बे ।
भव भय हारिणि देवी, तुम हो जगदम्बे ।। जय० ।।

तुम गंगा, तुम गीता, तुम ही सावित्री ।
सविता शक्ति स्वरूपा, माता गायत्री ।। जय० ।।

स्वाहा स्वधा तुम्ही हो, तुम ही रुद्राणी ।
तुम विद्या तुम वाणी, कमला कल्याणी ।। जय० ।।

शुद्ध बुद्धि की दाता, तुम जन की दाता ।
तुष्टि पुष्टि तुम हो मां, ऋद्धि सिद्धि दाता ।। जय० ।।

तुम राधा, तुम सीता, तुम हो इन्द्राणी ।
परमा प्रकृति तुम्हीं हो, माता ब्रह्माणी ।। जय० ।।

गायत्री जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
चारपदारथ पावे, भव भय मिटि जावे ।। जय० ।।

❋

मां शीतला

मां शीतला रोगों को दूर करने वाली प्रधान देवी है, चेचक ही नहीं, बालक, वृद्ध, युवा या पुरुष अथवा स्त्री कोई भी हो, किसी को भी किसी प्रकार का रोग हो तो इसके पाठ से वह रोग समाप्त हो जाता है ।

यह मेरा अनुभव है, कि यदि निम्न स्तोत्र का एक पाठ नित्य घर में किया जाय तो उसके घर में किसी प्रकार का रोग व्याप्त नहीं होता, यदि बालक को अथवा घर के किसी सदस्य को किसी प्रकार का रोग हो तो उसके सिरहाने बैठकर इस स्तोत्र के इक्कीस पाठ करने से वह रोगी उसी दिन से धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगता है।

वस्तुतः गृहस्थ जीवन को सुख, शांतिमय बनाने के लिए इस स्तोत्र का महत्व सर्वाधिक है ।

श्री शीतला चालीसा

दोहा

जय जय माता शीतला, तुमहिं धरै जो ध्यान ।
होय विमल शीतल हृदय, विकसै बुधि बल ज्ञान ।।
घट घट वासी शीतला, शीतल प्रभा तुम्हार ।
शीतल छहियां में झुलइ, मइया पलना डार ।।

चौपाई

जय जय श्री शीतला भवानी ।
जय जग जननि सकल गुण खानी ।।
गृह गृह शक्ति तुम्हरो राजित ।
पूरण शरद चन्द्र समसाजित ।।
विस्फोटक से जलत शरीरा ।
शीतल करत हरत सब पीरा ।।
मातु शीतला तव शुभ नामा ।
सबके गाढ़े आवहिं कामा ।।
शोक हरी शङ्करी भवानी ।
बाल प्राण रक्षी सुख दानी ।।
शुचि मार्जनी कलश कर राजै ।
मस्तक तेज सूर्य सम साजै ।।
चौसठ योगिनि संग में गावैं ।
वीणा ताल मृदंग बजावैं ।।
नृत्य नाथ भैरो दिखलावैं ।
सहस शेष शिव पार न पावैं ।।

धन्य धन्य धात्री महरानी ।
सुर नर मुनि तव सुयश बखानी ।।
ज्वालारूप महा बलकारी ।
दैत्य एक विस्फोटक भारी ।।
घर-घर प्रविशत कोई न रक्षत ।
रोग रूप धरि बालक भक्षत ।।
हाहाकार मच्यो जग भारी ।
सक्यो न जब कोई संकट टारी ।।
तब मइया धरि अद्भुत रूपा ।
कर में लिए मार्जनी सूपा ।।
विस्फोटकहिं पकड़ कर लीन्हो ।
मुसल प्रहार बहुत विधि कीन्हो ।।
बहु प्रकार वह विनती कीन्हा ।
'मइया नहिं' भल मैं कछु चीन्हा ।।
अब नहि मातु काहु गृह जइहों ।
जहं अपवित्र वही घर रइहों ।।
पूजन पाठ मातु जब करिहैं ।
होइ आनन्द सकल दुख हरिहैं ।।
भभकत तन शीतल ह्वै जइहैं ।
विस्फोटक भय घोर नसइहैं ।।
श्रीं शीतलहिं भजे कल्याना ।
वचन सत्य भाषै भगवाना ।।
बिस्फोटक भय जिही गृह भाई ।
भजै देवि कहं यही उपाई ।।
कलश शीतला का सजवावै ।
द्विज से विधिवत पाठ करावै ।।
तुम्ही शींतला जग की माता ।
तुम्ही पिता जग की सुख दाता ।।
तुम्ही जगद्धात्री सुख सेवी ।
नमो नमामि शीतले देवी ।।
नमो सुख करणी दुख हरणी ।
नमो नमो जग तारण तरणी ।।
नमो नमो त्रैलोक्य वन्दनी ।
दुखदारिद्रादिक निकन्दनी ।।
श्री शीतला, शोढला, महला ।
रुणकी ऋणकी मातु मन्दला ।।
हो तुम दिगम्बरी तनु धारी ।
शोभित पंचनाम असवारी ।।
रासभ, खर, वैसाख सुनन्दन ।
गर्दभ दूर्वा कन्द निकन्दन ।।
सुमिरत संग शीतला माई ।
जाहि सकल दुःख दूरि पराई ।।
गलका, गलगण्डादिक जु होई ।
ताकर मन्त्र न औषधि कोई ।।
एक मातु जी का आराधन ।
और नहीं कोई है साधन ।।
निश्चय मातु शरण जो आवै ।
निर्भय मन इच्छित फल पावै ।।
कोढ़ी, निर्मल काया धारै ।
अन्धा दृग निज दृष्टि निहारै ।।
बन्ध्या नारि पुत्र को पावै ।
जन्म दरिद्र धन्य ह्वै जावै ।।
मातु शीतला के गुण गावत ।
जन्म मूक को छन्द बनावत ।।
यामैं कोई करै नहीं शंका ।
जग में मैया का ही डंका ।।
भनत रामसुन्दर प्रभुदासा ।
तट प्रयाग से पूरब पासा ।। ※

शनिदेव

नवग्रहों में शनिदेव का प्रमुख और महत्वपूर्ण स्थान है, तीस वर्षों में एक बार शनि की जब 'पनौती' आती है, तो वह व्यक्ति के लिए घोर कष्टदायक भी हो जाती है।

कहते है कि जो नित्य एक बार शनि चालीसा का पाठ कर लेता है, उसे ग्रहों से सम्बन्धित कोई दुःख या कष्ट व्याप्त नहीं होता।

वस्तुतः शनि स्तोत्र का पाठ हमारे नित्य पूजन में आवश्यक है।

❋ श्री शनि चालीसा ❋

दोहा

श्री शनिश्वर देवजी, सुनहु श्रवण मम टेर।
कोटि विघ्न नाशक प्रभो, करो न मम हित बेर॥

सोरठा

तव स्तुतिहेनाथ, जोरिजुगल करकरतहौं।
करिये मोहिं सनाथ, विघ्नहरन हे रवि सुवन॥

चौपाई

शनिदेव मैं सुमिरौं तोहीं।
विद्याबुद्धि ज्ञान दो मोहीं॥
तुम्हारो नाम अनेक बखानौ।
क्षुद्र बुद्धि मैं जो कछु जानौं॥
अंतक, कौण, रौद्र यम गाऊँ।
कृष्ण बभ्रु शनि सबहि सुनाऊँ॥
पिंगल मन्द सौरि सुख दाता।
हित अनहित सब जन के ज्ञाता॥
नित्य जपे जो नाम तुम्हारा।
करहु व्याधि दुख से निस्तारा॥
राशि विषमवस असुरन सुर नर।
पन्नग शेष सहित विद्याधर॥
राजा रंक रहहिं जो नीको।
पशु पक्षी बनचर सबही को॥
कानन किला शिविर सेना कर।
नाश करत सब ग्राम्य नगर भर॥
डालत विघ्न सब हि के सुख में।
व्याकुल होहिं पड़ें सब दुख में॥
नाथ बिनय तुमसे यह मेरी।
करिये मोहिं पर दया घनेरी॥

मम हित विषम राशि महँ वासा ।
करिय न नाथ यही मम आसा ।।
जो गुड़ उड़द वार शनीचर ।
तिल जव लोह अन्न धन वस्तर ।।
दान दिये से होयँ सुखारी ।
सोइ शनि सन है विनय हमारी ।।
नाथ दया तुम मोपर कोजै ।
कोटिन विघ्न क्षणिक महँ छीजै ।।
वन्दत नाथ युगल कर जोरी ।
सुनहु दया करि विनती मोरी ।।
कबहुँ तीरथ राज प्रयागा ।
सरयू तीर सहित अनुरागा ।।
कबहुँ सरस्वती शुद्ध नीर महँ ।
या कहुँ गिरा खोइ कन्दर महँ ।।
ध्यान धरत हैं जो जोगी जन ।
ताहि ध्यान मँ सूक्ष्म मोहिं शन ।।
है अगम्य क्या करूँ बड़ाई ।
करत प्रणाम चरण शिर नाई ।।
जो विदेश से वार शनीचर ।
मुड़कर आवेगा निज घर पर ।।
रहै सुखी शनि देव दुहाई ।
रक्षा रवि सुत रखें बनाई ।।
जो विदेश जावै शनिवारा ।
गृह आवै नहिं रहे दुखारा ।।
संकट देयँ शनिचर ताही ।
जेते दुखी होइ मन माहीं ।।
सोइ रवि नन्दन को करजोरी ।
वन्दन करत मूढ़ मति थोरी ।।
ब्रह्मा जगत बनावन हारा ।
विष्णु सबहिं नित देत अहारा ।।
हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी ।
विभु देव-मूरति एक बारी ।।

एक होइ धारण करत शनी नित ।
वन्दत सोइ शनिको दम नचित ।।
जो नर पाठ करै मन चित से ।
सो नर छूटै व्यथा अमित से ।।
हों सुपुत्र धन सम्पति बाढ़े ।
कली काल कर जोरे ठाढ़े ।।
पशु कुटुम्ब बान्धव आदिक से ।
भरो भवन रहिहैं नित सबसे ।।
नाना भाँति भोग सुख सारा ।
अंत समय तज कर संसारा ।।
पावै मुक्ति अमर पद भाई ।
जो नित शनि सों ध्यान लगाई ।।
पढ़ै प्रात जो नाम शनी दस ।
रहैं शनिश्चर नित उसके बस ।।
पीड़ा शनि की कबहूं न होई ।
नित उठ ध्यान धरै जो कोई ।।
जो यह पाठ करै चालीसा ।
होय सुखी साखी जगदीशा ।।
चालिस दिन नित पढ़ै सवेरे ।
पातक नाशैं शनी घनेरे ।।
रवि नन्दन की अस प्रभुताई ।
जगत मोह तम नाशै भाई ।।
शनि को पाठ करै जो कोई ।
सुख सम्पति की कमी न होई ।।
निशि दिन ध्यान धरै मन माहीं ।
आधि व्याधि ढिग आवै नाहीं ।।

दोहा

पाठ शनीचर देवका, कीन्हां विमल तयार ।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार ।।
मो स्तुति दशरथ किये, सन्मुख शनी निहार ।
सरस सुभाषा में वही, लालता लिखा सुधार ।।

श्री विष्णु

भगवान विष्णु आदि देव कहे जाते हैं, जो अजर अमर निर्विकार हैं, जिनका ध्यान जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, जिनका स्मरण समस्त पापों का नाश करने वाला है, जिनका ध्यान मानव की पूंजी है।

ब्रह्म स्वरूप भगवान विष्णु का स्मरण प्रत्येक भारतीय के लिए दिव्यतायुक्त है, अपनी पूजा साधना, आराधना में भगवान विष्णु का स्थान आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य समझना चाहिये।

श्री विष्णु चालीसा

नील वर्ण पीताम्बर सोहै ।
भक्तजनों के मन को मोहै ।।
चरण-सरोरुह अतिशय सुन्दर।
नानाविध भव-सम्भव भयहर ।।
पीत वसन अभिराम मनोहर।
तडित कान्ति सुर-चाप विभाकर ।।
कटि तनु शोभित वक्ष विशाला।
उर सज्जित सुन्दर वनमाला ।।
वरद हस्त चारों अति साजै ।
करतल जिनके अरुण विराजै ।।
अंगुलि सकल मुद्रिका-युक्ता ।
जिनमें जडी विविध मणिमुक्ता ।।
एक हाथ में शंख विराजै।
कुन्द इन्दु-सी शोभा छाजै ।।

चक्र दूसरे कर में धारी ।
दानव सेना का संहारी ।।
गदा तीसरे हाथ विराजै ।
सूर्य समान सदा जो भ्राजै ।।
पद्म चतुर्थ हाथ में लीन्हें ।
भक्त-मनोरथ पूरन कीन्हें ।।
चिबुक भक्त के भय की हारी।
शरणागत की रक्षाकारी ।।
मन्द मधुर मुसकान अनोखी।
देख देख सुर धारै तोखी ।।
दन्त-पंक्ति अति शुभ्रकली-सी।
हंसी विद्रुम-मध्य पली-सी ।।
नासा नरक-भीति की नासी।
पुण्यरूप की कीर्ति-लता-सी ।।

नयन युगल है कमल समाना ।
भृकुटि-चाप के सम अनुमाना ।।
मुकुट मनोहर रवि सम शोभी ।
रत्न-जटित स्वर्णिम सुर-लोभी ।।
अंगद कंकण चारु विचित्रा ।
कांची नूपुर नित्य पवित्रा ।।
उज्ज्वल चमचम चमकैं भूषण ।
भागै दर्शक के सब दूषण ।।
गरुड मनोगति वाहन प्यारा ।
संसृति--सर्प - निवारण हारा ।।
आप सदा पर-पद के वासी ।
निज जन हृदय-सरोज निकासी ।।
त्रिगुणातीत परम पद शोभा ।
मुनि जन मन में अतिशय शोभा ।।
अमितौजा पर नित्य विराजैं ।
मां भी संग में वहीं विराजैं ।।
वाम अङ्ग में वे छबि छाजैं ।
अपनी द्युति से हरि को साजैं ।।
भक्त अनुग्रह - विग्रह देवी ।
रमा - विष्णु के हैं हम सेवी ।।
रमा इन्दिरा लक्ष्मी माता ।
नाम उन्हीं के वेद बताता ।।
जो लक्ष्मी नारायण सोई ।
उनमें भेद कहीं नहीं कोई ।।
जो माधव सो राधा प्यारी ।
वृन्दावन में कुञ्ज - बिहारी ।।
जो सीता सो राघव भी हैं ।
इनमें भेद कदापि नहीं है ।।
ले अवतार जभी प्रभु भूपैं ।
धरैं रमा भी रूप अनूपैं ।।
जहां सूर्य है कान्ति वहीं है ।
जहां चन्द्र है शान्ति वहीं है ।।
विष्णु जहां हैं वहीं रमा हैं ।
सदा माधव भी विष्णु-समा हैं ।।
विश्व-नियन्ता अन्तर्यामी ।
लोकविनत त्रिभुवन के स्वामी ।।
भव्य रूप मंगलमय शीला ।
सदा करैं रुचिकर शुभ लीला ।।
जो नर हरि-गुण-गण को गावै ।
सो निज हृदय मनोरथ पावै ।।
धार्मिक धर्म करै मन लाई ।
धन-रुचि द्रव्य अनेक कमाई ।।
और अनेक कामना – कारी ।
पावै प्रभु से सम्पत्ति सारी ।।
जो चाहै सब बंधन नाशा ।
पूर्ण करैं प्रभु वह भी आशा ।।
जो हरी-पद में रति लावैं ।
कृपा करैं प्रभु वह भी पावैं ।।
जय जय नारायण श्रीवासा ।
कीजै नित मम उर–पुर वासा ।।
हरिये प्रभु मम संकट भारी ।
हे गजराज-विपत्ति विदारी ।।
त्रिगुण रहित निज गुण सहित दिव्य रूप श्रीवास ।
रमा सहित मम हृदय में करिये नित्य निवास ।।

卐 श्रीराम गुण चालीसा 卐

जय रघुनंदन जय सियाराम जानकी वल्लभ सीताराम, रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम।
भोर पड़ी भक्तन ने पुकारे, कष्ट हरो प्रभु आप हमारे, तब दशरथ घर जन्मे राम, पतितपावन........
ताड़क वन में ताड़का मारी, गोतम नारि अहिल्या तारी, रिसियन के भय पूरन काम, पतितपावन........
जनकपुरी में धनुष को तोड़ा, जनक सुता से नाता जोड़ा, कैसी सुन्दर जोड़ी राम, पतितपावन........
परशुराम ने करी लड़ाई, अंश खेंच लीनी रघुराई, सब भूपत को गाल्यो मान, पतितपावन........
राज तिलक की करी तयारी, तब कैकेई ने बातबिचारी, पिता वचन सिर धारे राम, पतितपावन........
वन जाने की आज्ञा पाई, सीता लक्ष्मण संग ले आई, तब दशरथ ने तज दिये प्राण, पतितपावन.... ..
नाव खेवैया तुम यहां आवो, हम तीनों को पार लगावो, चौदह वर्ष वन खंड में धाम, पतितपावन........
हरि आपकी लीला न्यारी, पत्थर की कर दीवी नारी, मेरा इससे चलता काम, पतितपावन........
चित्रकूट पहुँचे रघुराई, भरत मुनि दर्शन को आये, पंचवटी कीन्हों विश्राम, पतितपावन.. ....
जा वन में हरि कुटी बनाई, शुरपनखा को नाक कटाई, खर दूशन को मारे राम, पतितपावन........
रावणपापी को अंत आयो, मारीच को स्वर्णमृग बनायो, छल के लायो राम की वाम, पतितपावन........
दशकन्धर लंका को धायो, मान जटायु युद्ध मचायो, पंख काट कीन्हों हैरान, पतितपावन........
मृग मार लाये दोनों भाई, तब कुटियन को रीतो पाई, व्याकुल हो गये लक्ष्मण राम, पतितपावन........
बिलख विलाप करत वन माहीं, तब पंछी ने कथा सुनाई, हाथा कारज कीन्हीं राम, पतितपावन........
शिवरी रटत सदा रघुराई, बोर खाय लीला दिखलाई, दीन जाति अपनाई राम, पतितपावन........
हनुमान ने भक्ति पाई, सुग्रीव की नारि दिलाई, बाली को पहुँचाए धाम, पतितपावन........

सिय सुधि लेन चले बजरंगी, लंका जला करी बेढ़गी, नवल बाग आये हनुमान, पतितपावन........
कपि सेवक कीन्हीं चतुराई, ऊपर से मुंदरी छिटकाई, पीछे हकीकत कही तमाम, पतितपावन........
लंका ऊपर करी चढ़ाई, पानी ऊपर शिला तिराई, रामेश्वर को थाप्यो धाम, पतितपावन........
लंका में पहुँचे रघुराई, मन्दोदरी तब अरज सुनाई, सीता दे कर लो प्रणाम, पतितपावन........
तिरिया जाति अकल की ओछी, कैसे देबु सीता पाछी, रघुवंशी को रखु न नाम, पतितपावन........
रण संग्राम की हुई तैयारी, असुर खेलता बारी बारी, लंका में मच्यो घमसान, पतितपावन........
मेघनाद ने शक्ति चलाई, लक्ष्मण को मूर्छा गति आई, वैद्य बुलाए तब ही राम, पतितपावन........
काछव सुर उगण नहिं पावे, ता पहिला संजीवनी लावे, तब हनुमान ने झेल्यो काम, पतितपावन........
जड़ी काज हनुमान पठाये, द्रोणगिरि पर्वत को लाये, तब भरत ने मारयो बाण, पतितपावन........
रामनाम जब वचन सुनायो,भरतमुनि मन में पछतायो,अनरथ घोर कियो अनजान, पतितपावन........
रुदन करत रघुनाथ पुकारे, नहीं बचेंगे भ्रात हमारे, अब तक नहिं लौटे हनुमान, पतितपावन........
संजीवनी जब घोट पिलाई, जागे लक्ष्मण प्यारे भाई, लौटे फिर लक्ष्मण में प्राण, पतितपावन........
कुम्भकरन घननाद करारी,हरि से युद्ध कियो बलकारी, है मुझको शिव का वरदान, पतितपावन........
फिर से लक्ष्मण करी लड़ाई, मेघनाद की भुजा उड़ाई, उड़न लगी असुरन की जान, पतितपावन........
भुजा देख सुलोचना रोई, लंका में अब बचे न कोई, मैं बालक उमर नादान, पतितपावन........
शीश लेन शरनागत आई, मोहाश्वसुर ने असहाय बनाई, सती होन मन लोनी ठान, पतितपावन........
अहिरावण ले गयो रघुराई, पवन पुत्र ने करी चढ़ाई, अहिरावण को मारे हनुमान, पतितपावन........
रावण युद्ध कियो रघुराई, बीस भुजा दस शीश उड़ाई, सीता को फिर पाई राम, पतितपावन........
नल नील जब करी लड़ाई, रण भूमि में जीत कराई, विभीषन को दीना राज, पतितपावन........
अवधपुरी आये रघुराई, घर घर मंगलाचार कराई, सबको दर्शन दीना राम, पतितपावन........
सीताराम सिंहासन बैठा, माता भ्रात नगरी भेठा, हनुमन्त चंवर डुलावे राम, पतितपावन........
मनुष चरित लीला दिखलाई, हरि को अंत नहिं कोई पाई, जो पावै सो पहुँचे धाम, पतितपावन........
तुलसीदास भजो भगवाना, हरि चरणों में ध्यान लगाना, पूरण होवे सबके काम, पतितपावन........

— ✲ —

श्री मद्भगवद्गीता

एकादशाध्याय

श्री मद्भगवद्गीता भारत का ही नहीं, विश्व का श्रेष्ठ ग्रन्थ है, जिसकी प्रत्येक पंक्ति सारगर्भित है, कर्मयोग का यह श्रेष्ठतम ग्रन्थ है, जो भगवान कृष्ण के मुख से निस्रत है ।

इसमें भी ग्यारहवें अध्याय का विशेष महत्व है, क्योंकि इसमें वर्णित भगवान कृष्ण के विराट रूप का दिग्दर्शन है ।

गीता का ग्यारहवां अध्याय तो नित्य पाठ करने योग्य है ।

भगवन् बहुत अनुग्रह कीया ।
गुप्त ज्ञान हमको कह दीया ।।
तब उपदेश सफल हो पावा ।
भगवन् मेरा मोह नशावा ।।१।।
उत्पत्ति प्रलय सुन विस्तारा ।
तुम से हे श्री कृष्ण पियारा ।।
और सुना अविनाशी भावा ।
कमल नयन मैं बहु सुख पावा ।।२।।
जो कुछ प्रभो मुझे तुम भाखा ।
वह सब सत्य सत्य कर राखा ।।
जो तुम रूप कहा गिरधारी ।
तिस देखन की इच्छा भारी ।।३।।

दोहा

भगवन् देखन योग जो, मुझको समझें आप ।
कर प्रगट उस रूप को, मेटो मम संताप ।।४।।

पारथ देखो रूप हमारा ।
शत संख्यक अरु रूप हजारा ।।
दिव्य अलौकिक विविध प्रकारा ।
नाना वर्ण बहुत आकारा ।।५।।
आदित्य वसु रुद्रों को देखो ।
अश्वनीकुमार पवन को देखो ।।
जो पहिले तुम कभी नहीं देखा ।
तिसको देख नहीं हो लेखा ।।६।।
अब तुम इस मम तनु के मांहीं ।
हो हुशियार देर कछु नाहीं ।।
और भी जो कछु देखन चाही ।
अर्जुन देख हमारे माहीं ।।७।।
यह जो तुम्हरे नैन पियारे ।
देख सकें नहिं रूप हमारे ।।
दिव्य नयन ले कुन्तिकुमारा ।
देखो अद्भुत रूप हमारा ।।८।।

दोहा

राजन् ऐसे बोल कर, योगेश्वर भगवान ।
पारथ को दिखला दिया, अपना रूप महान ।।९।।

नाना मुख बहु नयन विशाला ।
नाना अद्भुत दर्शन वाला ।।
दिव्य विभूषण बहुत सुहाये ।
कर में शस्तर दिव्य उठाये ।।१०।।

अद्भुत माला वस्तर धारे ।
दिव्य गन्ध अति लपटा मारे ।।
अचरज रूप सभी परकारा ।
अर्जुन ने यह रूप निहारा ।।११।।

नभ में रवि हजार चढ़ जावें ।
इक दम सब परकाश करावें ।।
वह तिसके परकाश समाना ।
हो या नहिं हो अस अनुमाना ।।१२।।

बहु प्रकार भेद को पाये ।
सब जग बहु विधि बनत बनाये ।।
यह जो रूप कृष्ण निर्माया ।
अर्जुन देखत रुप लुभाया ।।१३।।

दोहा

गद्‌गद् कण्ठ रोमाञ्च हो, मन में विस्मय धार ।
हाथ जोड़ परणाम कर, बोला वचन विचार ।१४।

देव समूह देह में देखूं ।
भूत प्रेत इस ही में पेखूं ।।
ब्रह्मा महादेव ऋषि लोगा ।
दिव्य सर्प भासें सब भोगा ।।१५।।

नाना बाहु उदर मुख वन्ता ।
देखूं तुमरे रूप अनन्ता ।।
आदि मध्य तब अन्त न भासे ।
विश्व रुप किमि कहुँ प्रकासे ।।१६।।

मुकुट गदा अरु चक्र समेता ।
तेज राशि परकाश निकेता ।।
दुर्घट रूप तुम्हें मैं देखूं ।
पावक सूरज सम मैं पेखूं ।।१७।।

परमाक्षर तुम जानन योगा ।
तुम आधारे हैं सब लोगा ।।
नित्य धर्म रक्षक सुख राशी ।
पुरुष सनातन तुम अविनाशी ।।१८।।

आदि मध्य नहिं अन्त तुम्हारा ।
तुमसे व्यापत सब संसारा ।।
अनन्त बाहु अरु शक्ति वाला ।
शशि सूरज है नैन विशाला ।।
दीपत अग्नि वदन तुम्हारा ।
तेज से तप्त हुआ संसारा ।।१९।।

पृथ्वी स्वर्ग बीच आकाशा ।
तुमसे व्यापत सब नभ आशा ।।
रूप भयंकर देख तुम्हारा ।
तीन लोक ने धीरज हारा ।।२०।।

देव करें तुम में परवेशा ।
केचिद् डर कर दें उपदेशा ।।
स्वस्ति कह कर सिद्ध मुनीशा ।
महती स्तुति करें जगदीशा ।।२१।।

रुद्र रवि वसु विश्वे देवा ।

साध्य वैद्य नहीं समझे भेवा ।।
यक्ष असुर अरु सिद्ध गन्धर्वा ।
विस्मत देखें तुमको सर्वा ।।२२।।

महाबाहो तव रूप कराला ।
दांत उदर बहु बाहु विशाला ।।
देख के लोग सभी डर पावे ।
मेरा मन भी बहु घबरावे ।।२३।।

दोहा

गगन स्पर्शी रूप यह, मुख का बहु विस्तार ।
देखि रूप विकराल अति, धीरज गयो हमार ।२४।

काल समान देखि मुख तेरा ।
रहा नहीं यह धीरज मेरा ।।
दिशा ज्ञान नहि शम लव लेशा ।
मुझ पर हो प्रसन्न देवेशा ।।२५।।

धृतराष्ट्र सुत जे विकरारा ।
राज समाज सहित विस्तारा ।।
भीष्म द्रोण कर्ण रणधीरा ।
मुख्य मुख्य जे हमरे वीरा ।।२६।।

दाढ भयंकर जिनके मांही ।
तव आनन में सब प्रविशाही ।।
कोई इक दांत बीच ही लागे ।
उत्तम अंग शीश सब भागे ।।२७।।

जिमि नदियां के बहु परवाहा ।
सागर सन्मुख हुए उत्साहा ।।
तिमि तव मुख में वह सब वीरा ।
करें प्रवेश बड़े रणधीरा ।।२८।।

जिमि जलती अग्नी के मांहीं ।
शलभ समूह नाश को जांहीं ।।
तिमि सब लोग नाश के हेतू ।
तव मुख में जावें श्रुति सेतू ।।२९।।

दोहा

भक्षण कर तिन सबन को, चाट रहे हो आप ।
भगवन तुम्हरे तेज से, जग को बहु संताप ।।३०।।

भयदायक क्या रूप तुम्हारा ।
दया करो प्रणाम हमारा ।।
आदि रूप को जानन चावूं ।
तब विस्तार का अन्त न पावूं ।।३१।।

महाकाल का रूप बनाया ।
लोक नाश को यहां सिधाया ।।
तुमसे बिन भी नहीं बच पावें ।
मर कर सब परलोक सिधावें ।।३२।।

इससे उठ तुम यश को पावो ।
जीत अरिन को राज्य कमावो ।।
मैंने तो यह पहिले मारे ।
निमित्त मात्र तुम होवो प्यारे ।।३३।।

भीष्म द्रोण जयद्रथ वीरा ।
अन्य नरेश करण रणधीरा ।।
मम मारों को तुम फिर मारो ।
युद्ध करो दुश्मन संहारो ।।३४।।

दोहा

केशव के यह वचन सुनि, फिर कीनो नमस्कार ।
गदगद अरु भयभीत हो, अर्जुन करे पुकार ।।३५।।

तुम्हरा यश सुन जग हरषावे ।
अन्तर्यामी प्रेम को पावे ।।

भागें राक्षस हो भयभीता ।
सिद्ध नमें अति चरण विनीता ।।
यह सब योग्य वान है प्यारे ।
दुष्ट दलन भक्तन हितकारे ।।३६।।

क्यों न करें तुमको नमस्कारा ।
ब्रह्मा के भी तुम करतारा ।।
तुम हो ब्रह्म सर्व आधारा ।
निर्गुण नाम रहित आकारा ।।३७।।

आदि देव पुरुष भगवाना ।
सकल विश्व के परम निधाना ।।
ज्ञाता ज्ञेय अरु तुम ही ज्ञाना ।
तुम से व्यापत सकल जहाना ।।३८।।

वायु वरुण अग्नि यम चन्दा ।
प्रजापति विधि परमानन्दा ।।
नमो नमो तुमको लख बारा ।
बारम्बार प्रणाम हमारा ।।३९।।

आगे पीछे करूं प्रणामा ।
सर्व ओर से हे घनश्यामा ।।
अति प्रभाव अति रूप अनूपा ।
सब में व्यापक सकल स्वरूपा ।।४०।।

दोहा

सखा मान कर आपका, जो कीना अपकार ।
क्षमा करो अपराध मम, भक्तन के हितकार ।।४१।।

आसन शयन अहार विहारा ।
हास विलास किया अपकारा ।।
तिनके सन्मुख तथा अकेला ।
क्षमा करो जिमि गुरुवर चेला ।।४२।।

सकल लोक के तुम पितु माता ।
गुरु के गुरू पूजनीय ताता ।।
आप समान जगत में नाहीं ।
अधिक कहां त्रिलोकी मांहीं ।।४३।।

तिससे करूं दण्ड परणामा ।
मुझको क्षमा करो घनश्यामा ।।
सुत को क्षमा करत जिमि ताता ।
पति पत्नी को क्षमा कराता ।।
सखा दोष प्रेमी नहिं धारे ।
मुझ पर दया करो तुम प्यारे ।।४३।।

अद्भुत रूप देखि हरषाऊं ।
भय से मन में अति घबराऊं ।।
पहला रूप मुझे दिखलाओ ।
देवपति तुम खुश हो जाओ ।।४५।।

किरीट मुकुट अरु चक्कर धारी ।
देखन की है इच्छा हमारी ।।
चारभुजा फिर से बन जाओ ।
डरे हुए को मत डरपाओ ।।४६।।

अर्जुन योग माया परभावा ।
तुमको अद्भुत रूप दिखावा ।।
तेजोमय का अन्त न आवे ।
तुम बिन दूजा देख न पावे ।।४७।।

वेद पाठ यग दान करावे ।
करे तपस्या कर्म कमावे ।।
फिर भी इसको देख न पावे ।।
पारथ तुम बिन नहिं दरसावे ।।४८।।

मत हो व्याकुल मत घबराओ।
घोर रूप लख मत डरपाओ ।।
हो प्रसन्न दूर भय डारो।
वही रूप मम फेर निहारो ।।४९।।

दोहा

मत डरपो तुम वीरवर, बोले श्री भगवान।
कृष्ण रूप परगट कियो, रूप तेज की खान ।।५०।।

मानुष रूप आपका देखा।
सौम्य स्वरूप सामने पेखा ।।
अब मोहिं भगवन शान्ति आवा।
फिर से अपना मिला स्वभावा ।।५१।।

कठिन देखना मम यह रूपा।
देखा तुमने रूप अनूपा ।।
इन्द्र आदि जे देव विचारे।
मम दर्शन की इच्छा धारे ।।५२।।

वेद पाठ तप दान कराई।
यज्ञ करें चहे पारथ भाई ।।
तुमने जैसा रूप निहारा।
देखि सके नहि यह संसारा ।।५३।।

अनन्य भक्ति जो करते प्यारे।
अर्जुन मुझको वही निहारे ।।
सत् चित् आनन्द रूप लखावें।
अन्तकाल मुझ में मिल जावे ।।५४।।

जो कुछ कर्म मुझे अरपावे।
संग त्याग मुझ में मन लावे ।।
नहीं किसी से बैर करावे।
पाण्डव वह प्राणी मोहि पावे ।।५५।।

दोहा

विश्वरूप श्री कृष्ण जी, दिखलायो अवतार।
यह निचोड है अन्त में, भगवद भक्ति सार ।।५६।।

— ✡ —

गणपति स्मरण

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।

आरती

आरती भी दूसरे रूप में स्तोत्र ही है, इस संग्रह में पाठकों के लाभार्थ विशिष्ट आरतियां दे रहे हैं, जिससे कि साधक-पाठक लाभ उठा सकें।

वैदिक आरती

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥

ॐ आ रात्रि पार्थिव गूं रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदा गूं सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ॥

ॐ इद गूं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर गूं सर्वगण गूं स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ।

भगवान श्री गणेश जी

आरति गजवदन विनायककी । सुर मुनि-पूजित गणनायककी ॥
एकदंत शशिभाल गजानन, विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन, दुःखविनाशक सुखदायककी ॥सुर०॥
ऋद्धि-सिद्धि स्वामी समर्थ अति, विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अविगत गति, विद्या विनय विभव-दायककी ॥सुर ०॥
पिङ्गलनयन, विशाल शुंडधर, धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर, सुर-वन्दित सब विधिलायककी ॥सुर०॥

जगदीश्वर आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे ।।
भक्तजनोंके संकट छिन में दूर करे ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मन का ।। प्रभु० ।।
सुख सम्पत्ति घर आवै कष्ट मिटै तन का ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।। प्रभु० ।।
तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकी ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।। प्रभु ।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता ।। प्रभु० ।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।। प्रभु ।।
किस विधि मिलूँ दयामय ! मैं तुमको कुमती ।। ॐ जय जगदीश ।।

दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे ।। प्रभु० ।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।। प्रभु० ।।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ॐ जय जगदीश हरे ।।

☼

शिव आरती

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी ।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै ।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवांछित पावै ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

—

श्री सत्यनारायणजी की आरती

जय लक्ष्मीरमणा, श्री लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा ।। जय लक्ष्मीरमणा ।।

रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै ।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो ।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कंचन-महल कियो ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्ही ।
सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर अस्तुति कीन्ही ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

भाव-भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरचो ।।
श्रद्धा धारण कीन्ही, तिनको काज सरचो ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

ग्वाल-बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्हों दीनदयालु हरी ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा ।
धूप-दीप-तुलसी से राजी सत्यदेवा ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

(सत्य) नारायण जी की आरति जो कोइ नर गावै ।
तन-मन-सुख सम्पत्ति मन-वांछित फल पावै ।। जय लक्ष्मी रमणा ।।

कृष्ण - आरती

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला ॥श्रीगिरधर०॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारी की । श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ॥

कनक मय मोर मुकुट विलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन सों सुमन राशि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

जहां ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्री गंगा,
स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छवि श्री बनवारी की । श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ॥

चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू,
चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव फन्द,
टेर सुन दीन भिखारी की । श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ।

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ॥

दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ।। १ ।। जय अम्बे०

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ।। २ ।। जय अम्बे०

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।। ३ ।। जय अम्बे०

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ।। ४ ।। जय अम्बे०

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योती ।। ५ ।। जय अम्बे०

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।। ६ ।। जय अम्बे०

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।। ७ ।। जय अम्बे०

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी ।
आगम-निगम-बखानीं, तुम शिव पटरानी ।। ८ ।। जय अम्बे०

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ।। ९ ।। जय अम्बे०

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता ।। १० ।। जय अम्बे०

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। ११ ।। जय अम्बे०

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती ।
(श्री) माल केतुमें राजत कोटि रतन ज्योती ।। १२ ।। जय अम्बे०

(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ।। १३ ।। जय अम्बे०

गंगाधर आरती

ॐ जय गंगाधर जय हर जय गिरिजाधीशा ।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ।। १ ।। हर हर हर महादेव ।।

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने ।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंजवने गहने ।।
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता ।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ।।२।। हर हर हर महादेव ।।

तस्मिल्ललितसुदेसे शाला मणिरचिता ।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता ।।
क्रीडा रचयति भूषारंजित निजमीशम् ।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते श्रीशम् ।। ३ ।। हर हर हर महादेव ।।

विबुधवधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता ।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता ।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते ।
क्वण क्वण ललिता वेणु मधुरं नाटयते ।। ४ ।। हर हर हर महादेव ।।

रुण रुण चरणे रचयति नूपुर मुज्ज्वलिता ।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां ।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते ।
अंगुष्ठागुंलिनादं लासकतां कुरुते ।। ५ ।। हर हर हर महादेव ।।

कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम् ।
विनयतशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् ।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम् ।
डमरुत्रिशूल पिनाकं करधृतनृकपालम् ।। ६ ।। हर हर हर महादेव ।।

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम् ।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम् ।
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् ।।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम् ।। ७ ।। हर हर हर महादेव ।।

शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते ।।
अतिमृदुचरणसरोजं हृदये अति कृत्वा ।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा ।। ८ ।। हर हर हर महादेव ।।

ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा ।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ।।
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते ।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते ।। हर हर हर महादेव ।।

श्रीबद्रीनाथ–स्तुति

पवन मंद सुगन्ध शीतल, हेममन्दिर शोभितं ।
निकट गङ्गा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। १ ।।

शेष सुमिरन करत निशिदिन ध्यान धरत महेश्वरं ।
श्री बेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। २ ।।

इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप निवेदितं ।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। ३ ।।

शक्ति गौरि गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणं ।
योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। ४ ।।

यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितं ।
श्रीभूमि लक्ष्मी चवर डोलें, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। ५ ।।

कैलासमें एक देव निरंजन, शैल-शिखर महेश्वरं ।
भक्त नारायण करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।। ६ ।।

श्रीबद्रीनाथ (जी) की परमस्तुति, यह पढ़त पाप विनाशनं ।
कोटि-तीर्थ सुपुण्य सुन्दर सहज अति फलदायकम् ।। ७ ।।

राम – आरती

आरती कीजै श्रीरघुवर की । सत चित आनन्द शिव सुन्दर की । टेक।।
दशरथ-तनय कौशिला-नन्दन, सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन,
अनुगत-भक्त भक्त-उर-वन्दन, मर्यादा-पुरुषोत्तम-वर की ।। १ ।।
निर्गुण-सगुण, अरूप-रूपनिधि, सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि, मायारहित दिव्य नर-वरकी ।। २ ।।
जानकिपति सुराधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति, एकमात्र गति सचराचर की ।। ३ ।।
शरणागत-वत्सल-व्रतधारी, भक्त-कल्पतरु-वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी, वानर-सखा दीन-दुख-हरकी ।। ४ ।।

❋

श्रीमद्भगवद्गीता आरती

जय भगवद्गीते, मां जय भगवद्गीते ।
हरि हिय कमल विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ।। टेक ।।
कर्म सुकर्म प्रकाशिनि कामासक्तिहरा ।
तत्व ज्ञान विकासिनि विद्या ब्रह्म परा ।। जय ।।
निश्चल भक्ति विधायिनि निर्मल मलहारी ।
शरण रहस्य प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ।। जय ।।
राग द्वेष विदारिणि कारिणि मोद सदा ।
भव भय हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ।। जय ।।
आसुर भाव विनाशिनि नाशिनि तम रजनी ।
दैवी सद्गुण दायिनि हरि रसिका सजनी ।। जय ।।
समता त्याग सिखावनि, हरि मुख की बानी ।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ।। जय ।।
दया सुधा बरसावनि मातु कृपा कीज ।
हरि पद प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ।। जय ।।❋

सांध्य-गीत

जय प्रभु शंकर दीनदयाला।
प्रभुजी मोहे करो निहाला।।
सत्य संतोष शील मोहि दीजै।
मोरे दोष दूर सब कीजै।।
दया नम्रता मन में आवे।
मन भोगन में कबहुं न जावै।।
पर पीड़ा से चित्त हटाओ।
पाप कर्म से मोहे बचाओ।।
निर्मल चित्त करो प्रभु मोरा।
निश दिन भजन करूं मैं तोरा।।
यही कामना मन में स्वामी।
पूरन कर प्रभु अंतरयामी।।
जब लग कृपा न होवे तुम्हारी।
तब लग वृथा जन्म नर खोवे।।
माया के वश पड़ा भुलाना।
बार बार दुख पावे नाना।।
बिन सन्तोष न सुख कहुं होई।
भटकि भटकि नर जीवन खोई।।
अन्तकाल रो रो पछितावे।
गया वक्त फिर हाथ न आवे।
भोग शोक की खानि बखाने।
तिनसो मन कबहूं न अघाने।।
ग्लानि योग्य जो वस्तु सारी।
तिनसो प्रेम मूढ़ को भारी।।
छोड़ा चहे न कबहूं जिनको।
छिन में काल छुड़ावत तिनको।।
आपा छोड़ जो तुमको ध्यावै।
सो नर सहज मुक्ति को पावै।।
काम, क्रोध, मद, लोभ घनेरे।
प्रभुजी जग में बैरी मेरे।।
भगवन इनसे मुझे बचाओ।
निज चरणों का दास बनाओ।।
और न जग में ऐसा कोई।
करुणा करे दीन पर जोई।।
दुख मोचन है नाम तिहारा।
मैं हूं जग में अति दुखिआरा।।
भव सागर है अतिशय घोरा।
देख देख मन डरपत मोरा।।
मात पिता तुम बन्धु मोरे।
शरण गहूं मैं प्रभुजी तोरे।।
सब में अपना रूप दिखाओ।
जन्म मरण से मुझे बचाओ।।
कामादिक है ग्राह भयंकर।
इनसे मोहे बचाओ शकर।।
रागादिक सब दोष मिटाऊं।
जन्म मरण में कबहुं न आऊं।।

बार बार विनती करूं, सुनिये दीनदयाल। कृपा दृष्टि करके प्रभु, बेगी करो निहाल।।
शरीर साधन के लिए, जैसे है जलपान। वैसे ही मन के लिए, है सत्संग प्रमाण।।

देश की पुरानी धरोहर को सुरक्षित रखने में सहयोग दें

और जीवन भर बिना कुछ खर्च किये "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका मुफ्त में प्राप्त करें।

आप जानते हैं कि 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' पत्रिका एक क्रांतिकारी कदम है, और भारतीय संस्कृति, हमारे देवर्षियों की प्राचीन धरोहर मंत्र-तंत्र को सुरक्षित रखने में, लोप हो रही विद्याओं को पुनर्जागरित करने में तथा गोपनीय सामग्री को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है, यह एक मात्र ऐसी पत्रिका है, जिसने पूरे देश वासियों को इस पावन कार्य में सहयोग देने के लिए आह्वान किया है।

इस छोटी सी, अवधि में प्रत्येक वर्ष चार-बार विशेषांक निकाल कर इसने जता दिया है, कि पत्रिका के मूल में न तो स्वार्थ वृत्ति है, और न व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा ही। एक मात्र यही भावना है, कि स्वस्थ वातावरण में रचनात्मक कार्य हो सके, और एक बार पुनः हमारे जीवित रहते ही, हमारी आंखों के सामने मंत्रों-तंत्रों का निर्विवाद और अक्षुण्ण प्रभाव स्पष्ट कर सकें, उन्हें स्थायित्व दे सकें।

हम चाहते हैं, इसकी पृष्ठ संख्या बढ़. अधिक से अधिक यंत्रों का चित्रण हो सके, जिससे पूरा भारत ही नहीं, विश्व भी इसका लाभ उठा सके, पर इसके लिए आर्थिक स्थायित्व चाहिए, एक ऐसी निधि चाहिए, जो इसके पांवों को दृढ़ता दे सके

लक्ष्मी का सही सदुपयोग कीजिये

लक्ष्मी के तीन रूप होते हैं, एक तो ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो धन को येन-केन प्रकारेण दबा कर ही रखना चाहते हैं, न तो वे इसका लाभ उठा पाते हैं, और न उसका उपयोग ही करते हैं, कंजूस की तरह लक्ष्मी को दबा कर रखना ही उन के जीवन का लक्ष्य हो जाता है, ऐसे व्यक्ति धनाढ्य होते हुए भी निकृष्ट होते हैं।

दूसरे वे होते हैं, जो केवल अपना स्वार्थ ही देखते हैं, खुद के ऐश-आराम, भोग विलास के

लिए ही व्यय करते हैं, ऐसे व्यक्ति मध्यम कोटि के कहे जाते हैं।

तीसरे उत्तम पुरुष वे होते हैं, जो कमाते हैं, स्वयं भी उपभोग करते हैं, और समाज, देश तथा भारतीय-संस्कृति निर्माण में भी सहायक होते हैं, जो खुले हृदय से, कुछ तकलीफ और अभाव देखकर भी कार्य एवं शुभ उद्देश्य के लिए व्यय कर अक्षय यश के भागी होते हैं, और मृत्यु के बाद भी अपना नाम अक्षुण्ण रखने में समर्थ हो पाते हैं।

और मैं ऐसे ही पुण्यवान लोगों का आह्वान करता हूं, इस पुनीत कार्य में भाग लेने के लिए निमन्त्रित करता हूं, और मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र पत्रिका की तरफ से सुविधाएं देता हूं, कि वे समय रहते इस योजना का लाभ उठावें।

आपको इस योजना का लाभ उठाने में सिर्फ यह करना होगा

मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका आपको जीवन भर मिलती रहे, इसके लिए आप इसके आजीवन सदस्य बनकर पुनीत एवं श्रेष्ठ कार्य में भाग लें, इसके लिए आपको मात्र पन्द्रह सौ रुपये पत्रिका कार्यालय में भेजने होंगे, इसकी आपको रसीद मिलेगी, ऐसा होने पर आप इस महान पत्रिका के आजीवन सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे, और आपका नाम पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकेगा यदि आप चाहेंगे तो आपका नाम गोपनीय भी रखा जा सकेगा।

आप यदि एक साथ पन्द्रह सौ रुपये जमा कराना न चाहें, तो इसे पांच मासिक किश्तों में, बैंक ड्राफ्ट या मनियार्डर द्वारा भेज सकते हैं, आप को प्रति किश्त रसीद भेजी जायेगी, पहली किश्त प्राप्त होते ही आपको मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका निःशुल्क भेजनी प्रारम्भ कर दी जायेगी, पहली किश्त के बाद शेष किश्तें ठीक एक-एक महीने के अन्तर से प्राप्त हो जानी चाहिये, अन्यथा पत्रिका कार्यालय को अधिकार होगा, कि वह भेजी गई पत्रिका का शुल्क काट कर शेष रकम आपको लौटा दे।

भारतीय संस्कृति के नव-निर्माण में भाग लीजिये

यह पत्रिका किसी सरकारी संस्थान या पूंजीपति अथवा किसी राजनैतिक दल से सम्बन्धित नहीं है, और न ही यह किसी प्रकार की याचना अथवा सहायता स्वीकार करती है, यह तो केवल आप जैसे शुभचिन्तकों की सहायता और बलबूते पर ही निर्भर है, आपकी प्रेरणा सहायता व प्रोत्साहन से ही यह पत्रिका अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी।

आप जो धनराशि आजीवन सदस्यता के लिए भेजते हैं, वह आपकी धरोहर के रूप में जमा है, और आप जब भी चाहें, दस वर्ष का नोटिस देकर अपनी यह धनराशि वापिस ले सकते हैं, इसी प्रकार पत्रिका कार्यालय भी दस वर्ष का नोटिस देकर आपकी अमानत आपको लौटा सकेगा, जब तक यह रकम पत्रिका कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक पत्रिका बिना किसी शुल्क के इस जमा रकम के ब्याज से आपको बराबर मिलती रहेगी।

उपहार

आजीवन सदस्यता शुल्क पन्द्रह सौ रुपये एक किश्त जमा कराने पर

जो एक साथ आजीवन सदस्यता शुल्क पन्द्रह सौ रुपये पत्रिका-कार्यालय को भेज देंगे, उन्हें एक

उपहार 'रजत निर्मित अष्टलक्ष्मी मण्डित मुद्रिका' उपहार स्वरूप भेजी जायगी, शास्त्रों के अनुसार विशेष विजय मुहूर्त में तीन धातुओं से निर्मित इस मुद्रिका पर शुद्ध रजत पर निर्मित लक्ष्मी यन्त्र स्थापित है, जो दुःख और दारिद्रय मिटाने, व्यापारिक व आर्थिक उन्नति में अद्भुत रूप से सफलतादायक है–

समय-समय पर दी जाने वाली सुविधाएं

परिवार के अंग :

आजीवन सदस्य बनते ही आपको पत्रिका परिवार का ही अंग मान लिया जायगा, आपके सुख-दुःख में हम सहायक हैं, आपकी उन्नति हमारा उद्देश्य है, और भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से आप पूर्णता प्राप्त करें, यह हमारा लक्ष्य है, और रहेगा।

निःशुल्क ग्रन्थ भेंट :

साथ ही समय-समय पर पत्रिका कार्यालय से जो ग्रन्थ प्रकाशित होंगे, उनमें से चुने हुए ग्रन्थ आपको भेंट किये जायेंगे, इस प्रकार आपको अमूल्य साहित्य प्राप्त होता रहेगा।

ज्योतिष द्वारा मार्ग दर्शन :

व्यापार और घर में नित नई समस्याएं पैदा होती रहती है, इनका समाधान भी जरूरी है, पत्रिका द्वारा आपको इन समस्याओं का समाधान प्राप्त होता रहेगा।

दसों महाविद्याओं के यंत्र-चित्र :

भारतीय संस्कृति में दस महाविद्याएं सर्वोत्कृष्ट मानी गयी हैं, जिसकी साधना से जीवन में प्रत्येक दृष्टि से पूर्णता सम्भव है, ऐसे दुर्लभ यंत्र चित्र निःशुल्क भेंट किये जायेंगे।

मात्र 'आजीवन सदस्य' होते ही इन सभी सुविधाओं के आप आगे जीवन भर हकदार बन जायेंगे, क्या यह उपलब्धि कम है? और इससे भी बड़ी बात यह होगी कि आप पत्रिका को मजबूती दे सकेंगे, भारतीय संस्कृति के उत्थान में सहायक एवं सहयोगी हो सकेंगे।

दिव्य मुद्रिका उपहार

इस प्रकार की अद्भुत मुद्रिका विभिन्न साइजों में तैयार की है, और भारतीय संस्कृति के उत्थान प्रश्रय में सहयोगी होने के कारण श्रेष्ठ परमहंस स्वामी जी ने यौगिक आध्यात्मिक संकेत से स्पष्ट किया है, कि वे प्रत्येक मुद्रिका को सिद्ध कर, उसे सम्बन्धित महानुभाव के नाम से आशीर्वाद युक्त कर पत्रिका के माध्यम से उन तक पहुंचायेंगे।

धनराशि किसी व्यक्ति विशेष के नाम से न भेजें। बैंक ड्राफ्ट **'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान'** के नाम से बनावें। यह किसी भी बैंक का हो सकता है। आप मनिआर्डर से भी धनराशि भेज सकते हैं। यदि आप इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाना चाहते हैं तो आप लौटती डाक से ही आजीवन सदस्यता शुल्क एवं अपने हाथ की किसी भी उंगली का नाप निम्न पते पर भेजें —

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज.)

क्या आप गृहस्थ जीवन में पाई जाने वाली विविध समस्याओं से ग्रस्त हैं ?

तो आपके लिए चिर प्रतीक्षित उपयोगी असाधारण पुस्तक "भौतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के सफल प्रयोग" अत्यधिक आवश्यक है ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका के पाठक और प्रेमी होने के नाते आपके लिए यह शुभ सूचना है, कि अरविन्द प्रकाशन के अन्तर्गत यह महत्वपूर्ण चिर प्रतीक्षित पुस्तक – भौतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के सफल प्रयोग" प्रकाशित हो गई है ।

यह पुस्तक विविध सरल, गोपनीय और मौलिक उपायों तथा सरल साधनाओं से युक्त हैं, जिसे कोई भी व्यक्ति साधना सम्पन्न कर अनुकूलता प्राप्त कर सकता है, कुछ साधनाएं तो इतनी सरल है, कि बिना किसी उपकरण और वस्तुओं के भी सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं ।

※ गोपनीय सामग्री

सरल भाषा में साधना विधि के साथ-साथ इसमें कुछ ऐसे गोपनीय मन्त्र है, जो उच्चकोटि के साधुओं के पास ही थे, और पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं-अद्भुत प्रभावयुक्त, दरिद्रता निवारण में सहायक ।

※ स्थायी सामग्री

यह पुस्तक ऐसी नहीं है, कि पढ़कर फेंक दी जाय, अपितु यह तो संग्रहणीय पुस्तक है, जिसका लाभ आप तो उठायेंगे ही; आने वाली पीढ़ियां भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकेंगी । आपके लिए, आपके मित्रों और परिचितों के लिए, आपके पंडित और बुद्धिजीवियों के लिए .. एक अनुपम भेंट, जो आप उन्हें दे सकते हैं ।

※ किफायती

आज की इस मंहगाई में एक किलो मिठाई या होटल में चाय नाश्ता करने पर पन्द्रह रुपये व्यय हो जाते हैं, फिर यह तो स्थायी पुस्तक है, घर में रखने योग्य है, लाभ उठाने के लिए हैं —इतने कम मूल्य में इतनी श्रेष्ठ पुस्तक....आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं, कि यह कम मूल्य में कितना श्रेष्ठ उपहार है ।

※ बिना परेशानी

इस पुस्तक के पास होने से न तो पण्डितों के यहां चक्कर लगाने पड़ते हैं, और न जानकारी के लिए परेशान होना पड़ता है, आप केवल पुस्तक का मूल्य पन्द्रह रुपये (डाक व्यय सहित) मनियार्डर या बैंकड्राफ्ट से भेज दीजिये, बाकी सारा काम हम स्वयं करेंगे ।

आज ही धनराशि भेजकर इस ग्रंथ का लाभ उठाइये –

सम्पर्क— अरविन्द प्रकाशन (मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान विभाग) डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर

विश्व प्रसिद्ध, दिव्य तेजयुक्त

स्फटिक मणिमाला

(प्रामाणिक, पूर्ण रूप से मन्त्र सिद्ध, मन्त्र चैतन्य युक्त)

स्फटिक संसार का दुर्लभ और पवित्र पदार्थ है, इसका स्पर्श ही सुखदायक है, इसका दर्शन भाग्योदयकारक होता है, इसीलिए श्रीमन्त, उच्चकोटि के योगी एवं विद्वान् अपने गले में स्फटिक माला धारण करना पुण्यकारक एवं गौरवपूर्ण मानते हैं।

स्फटिक माला पांच रूपों में धारण की जा सकती है, सात मणियों की माला, पन्द्रह मणियों की, सत्ताईस मणियों की, चौवन मणियों की तथा एक सौ आठ मणियों की माला धारण करना शास्त्रोचित है।

पत्रिका कार्यालय ने जन साधारण को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से गले में पहनने योग्य मणियों को तथा मणिमालाओं को सिद्ध, चैतन्य एवं प्राण संजीवन क्रिया से युक्त किया है, साधकों के अनुसार :—

❀ यदि चैतन्य स्फटिक माला धारण कर स्तोत्र पाठ किया जाय, तो सम्बन्धित देवता प्रत्यक्ष उपस्थित होते हैं, तथा सफलता मिलती है।

— मन्त्र-समुच्चय

❀ किसी भी प्रकार की तांत्रिक-मांत्रिक या आध्यात्मिक साधना में चैतन्य स्फटिक माला का प्रयोग किया जाय, तो वह साधना निश्चय ही सफल होती है।

— तन्त्रसार

❀ योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द, त्रिजटा अघोरी, किंकर स्वामी, दतिया बाबा, आनन्द भैरवी आदि उच्चकोटि के साधकों ने एक स्वर से इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है—

सात मणियों की माला	३५) रु.
पन्द्रह मणियों की माला	७०) रु.
सत्ताईस मणियों की माला	१३०) रु.
चौवन मणियों की माला	२६५) रु.
एक सौ आठ मणियों की माला	५०१) रु.

❀ आधी धनराशि भेज दें, शेष धनराशि की वी. पी. कर दी जायगी।

❀ धनराशि निम्न पते पर मनियार्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें—

दुर्लभ सामग्री केन्द्र
डा. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)